ज़िन्दगी और मुखौटे

(काव्य-संग्रह)

लेखिका
बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक
के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN No :- 978-93-90580-12-5

कर्म-बद्ध-संकल्प

के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

मुख्य कार्यालय :- 18/91-ए, ईस्ट मोती बाग, सराय रोहिल्ला, दिल्ली-110007

शाखा कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950

Blogger :- https://kbsprakashan.blogspot.in

e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com

●

मूल्य : 320.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2020 © बिमला रावर सक्सेना

मुखपृष्ठ आवरण : बिमला रावर सक्सेना

मुद्रक :- विशाल कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

Book Name - ZINDAGI AUR MUKHAUTE
by BIMLA RAVAR SAXENA

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

जिन्दगी एक मुखौटे अनेक

माननीय पाठकगण अपना नया काव्य संग्रह "जिन्दगी और मुखौटे" आपको समर्पित कर रही हूँ। कैसा लगा यह निर्णय आपका होगा कि एक रचनाकार साहित्य की किसी भी विधा में लिखकर, वह केवल अपने जीवन के विषय में ही नहीं लिखता, अपितु घर-परिवार, मित्र, रिश्ते-नाते, समाज, देश-विदेश, ईश्वर और उसकी सृष्टि, धरती-आकाश, सागर, नदियाँ, क्षितिज, पर्वत, सड़कों पर होने वाले हादसे, समाज में होने वाली मानवता को कलंकित करने वाली घटनाएँ, राजनीति, नेता, अभिनेता अर्थात उसकी कलम सब के विषय में लिखती है। वह प्रकृति में डूबता है तो साथ ही दूसरों के दुख-दर्द की अनुभूति भी उसके हृदय में तूफान उत्पन्न कर देती है। वह सारी सुंदरता, रमणीयता के साथ ही अपनी रचनाओं में सृष्टि की प्रत्येक घटना को पाठकों के मानस तक पहुँचाना चाहता है।

"ज़िन्दगी और मुखौटे" पुस्तक की कविताएँ यदि आपके हृदय को स्पर्श करती हैं तो मेरा लेखन सफल होगा। मेरे लिए कविता शरीर में रहने वाली आत्मा है, जो प्रायः सभी के अंतःकरण से फूट पड़ती है, जैसे ऋषि वाल्मीकि के मुख से क्रौंच पक्षी के वध के बाद फूट पड़ी थी। कविता आत्मा को परमात्मा से मिलाती है। कविता मूक की आवाज़ है, भक्तों की भक्ति है, विरही की हूक है, अनहद का नाद है, तो कोयल की कूक भी है, संगीत की सहेली है। हृदय के सारे सुख-दुख कविता के रूप में कागज़ पर बिखरकर रचनाकार को अत्यंत शांति प्रदान करते हैं। कभी क़लम का सिपाही कलम की तलवार लेकर व्यवस्था से लड़ने भी चल पड़ता है। मैंने अपने मन की बात आप तक पहुँचा दी है। यदि मेरे मन की बात सहृदय पाठकगण तक पहुँचकर उनके मन को छू ले तो मेरा लेखन सार्थक हो जाएगा।

मैं अत्याधिक सम्मानपूर्वक उन विद्वानों की कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरी कविताओं को पढ़कर उनपर अपने विचार व्यक्त किए, और प्रेरणा एवं प्रोत्साहन दिया। माननीय डॉ हरीश नवल जी जिन्होंने अपनी विश्वप्रतिष्ठित

पत्रिका "गगनांचल" के गिरमिटिया एवं अन्य प्रवासी साहित्य विशेषांक में मेरी कविता "मैं टूटना नहीं चाहती" को स्थान दिया तथा मेरी सभी पुस्तकों को पढ़कर प्रेरणा दी। डॉ. पूरन सिंह जी, श्रीमान एस.जी.एस. सिसोदिया निसार, डॉ. राजीव श्रीवास्तव जी, जसवीर सिंह जी, डॉ. अमरनाथ अमर जी का दिल से आभार व्यक्त करती हूँ। मेरी सखी सुनीति कवान्त्रा से मेरा परिचय जामिया मिलिया इस्लामिया में 55 वर्ष पूर्व हुआ था, और मेरा सौभाग्य है कि हम कॉलेज के सहपाठी आज भी एक सहपाठी की तरह नित्यप्रति साहित्य, राजनीति, पौराणिक गाथाओं और आधुनिक साहित्य आदि पर चर्चा करते हैं। वह एक प्रभावशाली लेखिका हैं, मैं सुनीति दीदी को हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

प्रिय बंधु केदारनाथ 'शब्द मसीहा' जो गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में अंतसपटल को झकझोर देने वाली पुस्तकें लिखकर हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं, और एक प्रतिष्ठित व्यस्त लेखक होते हुए भी मेरे लिए समय निकालकर, मेरी कविताओं को पाठकों तक पहुँचाने के लिए, अपनी दीदी माँ के लिए जो परिश्रम करते हैं, उसके लिए उन्हें स्नेह शुभकामनाएं और आशीर्वाद। के.बी.एस. प्रकाशन, दिल्ली के प्रकाशक संजय 'शाफ़ी' जी को हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। मेरी कुछ प्रारंभिक पुस्तकों को प्रकाशित करने वाले श्री मनु भारद्वाज 'मनु' प्रकाशक माँडवी प्रकाशन का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। उनके लिखे प्रकाशकीय मेरे लिए उत्साहवर्धक एवं प्रेरणास्पद हैं। अनुराधा प्रकाशन के श्री मनमोहन शर्मा शरण जी को मेरे काव्य संग्रह के प्रकाशन और दिल छू लेने वाले प्रकाशकीय के लिए आभार व्यक्त करती हूँ।

बिमला रावर सक्सेना
बी-45, न्यू कृष्णा पार्क,
नई दिल्ली-110018
दूरभाष- 011-25533221

ज़िन्दगी के पन्नों का शब्दांकन

कविताओं का कागज़ पर अवतरण कोई साधारण घटना नहीं होती है, हृदय का मंदराचल जब भावनाओं की रज्जु से, रस के महोदधि का मंथन करता है, तब कहीं जाकर जीवन के महासमर के महासागर से वस्त्रालंकार से सुसज्जित शब्दों के कीर्ति कलश में लोकमंगल की अमृतकामना लिए हुए कविता का प्रसव होता है। वस्तुतः कविता केवल शब्दों की कारीगरी किया हुआ शब्द समूह नहीं है, वह मनुष्यता को दिशा, दृष्टि प्रदान करने वाली रौशनी भी है। इसी परिभाषा को बड़ी बहन बिमला रावर सक्सेना जी ने साकार करने का अद्‌भुत प्रयास किया है, इस कविता संग्रह ''ज़िन्दगी और मुखौटे'' के रूप में।

मैं बहन बिमला रावर सक्सेना जी की कविताओं का लंबे समय से पाठक और श्रोता रहा हूँ। मुझे यह लिखते हुए किंचित मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं लगती है कि इस कविता-संग्रह की समस्त रचनाएँ जीवन के अनुभूत अनुभवों की कठोर धरा के सीने को चीरकर उपजी हैं। कविता की उत्पत्ति के लिए जिस प्रकार के उर्वरहृदय की आवश्यकता होती है, और जिस प्रकार की सूक्ष्मदृष्टि की जरूरत होती है, आप इन कविताओं में वैसा ही पाएंगे। इन कविताओं की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि जब आप इन्हें पढ़ेंगे, तब आपके मुँह से यह बरबस ही निकल जाएगा कि यह तो मैं भी कहना चाहता था।

अपनी बात को पाठकों से स्वीकार करवा लेना ही कविता की सफलता है। और इस कसौटी पर बहन बिमला रावर सक्सेना जी की कविताएँ पूरी तरह खरी उतरती हुई प्रतीत होती हैं। आपकी कविताओं में वर्तमान समय की दिशा, समाज की स्थिति, आने वाले समय की चुनौतियाँ और मानवीय जीवन के प्रति व्यावहारिक चिंताएं, बहुत ही स्पष्टता से देखने को मिलती हैं। जीवन के आठ दशकों को जीने के बाद जीवन से उत्पन्न, सत्य और गहन चिंतन की कसौटी पर कसने के बाद इन कविताओं को शब्दों का रूप मिला है। अतः ये सब कवितायें हमारे जीवन के लिए मार्ग दर्शक का काम करती हैं, और चेतना के मील के पत्थर की तरह स्थापित हैं।

जीवन के समस्त रंगों को ये कविताएं, जो इस तरह के अनूठे रूप में

प्रस्तुत की जा रही हैं, अपने आप में बहुत कुछ जो समेटे हुए हैं, वह केवल सत्य है। इन कविताओं का अवतरण इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि ये कविताएं किसी क्षण विशेष की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि आत्ममंथन और अनुभव की मद्धम आँच पर पकाकर इनको ज्ञान के रस से सिंचित किया गया है। तब जाकर यह संकलन, इस पुस्तक के रूप में हम पाठकों के सामने आ सका है। मेरे इस कथन की संस्तुति इस कविता-संग्रह को पढ़ने के बाद आप स्वयं करेंगे, मुझे इस बात का पूरा आभास और भरोसा है। इसी कारण से इन कविताओं को किसी वर्ग-विशेष अथवा दृष्टिकोण में बाँधने की जरूरत नहीं पड़ी। इन कविताओं की खूबसूरती स्वयं ही इस बात की स्वीकारोक्ति करवाने में सक्षम है कि वर्तमान मानव जीवन से जुड़ी हुई हैं। इन कविताओं को किसी भी भूमिका की जरूरत नहीं है, ये कविताएं अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में स्वयं ही पूरी तरह सक्षम हैं, क्योंकि इन में दिल से दिल का संबंध शब्दों के माध्यम से साधा गया है, और इस कार्य में बिमला जी पूरी तरह सक्षम हैं।

हम देखते हैं कि इन कविताओं के रूप में बहुत-सी स्थापित मान्यताओं को भी कवयित्री बिमला रावर सक्सेना जी ने पुनः उकेरने का सफल प्रयत्न किया है, यथा उनकी कविता 'प्रथम गुरु होती है माता', इस कविता मे। व्यक्त किए हुए भावों को कोई भी नहीं नकार सकता। हम सभी मनुष्यों का जीवन अपनी माता की शिक्षाओं के सहारे ही शुरू होता है। माँ ही जीवन की पगडंडियों से हमारा परिचय करवाती है। दुनिया के अच्छे-बुरे का ज्ञान और गलत होने पर एक गुरु के रूप में अगर कोई हमारे पास सबसे मजबूत और प्रखर ज्ञान का दीपक होता है, तो वह हमारी माता ही होती है। एक माँ ही इस बात को बखूबी बता सकती है कि हमारा जीवन 'ईश्वर का रंगमंच' है। यह कोई छोटी घटना नहीं है, माँ गुरु के रूप में हमारे भावी जीवन की नैसर्गिक पटकथा ही नहीं लिखती है, बल्कि उसका निर्देशन भी करती है। जब हम थोड़े समझदार हो जाते हैं, तब माँ ही हमें सिखाती है कि हमारा जीवन 'अस्तित्व की लड़ाइ' है, और यह पूरी दुनिया हमारे साथ इस तरह पेश आती है जैसे कि 'दुनिया रिश्तों का बाजार' हो। भले ही यह दुनिया कितनी भी अच्छी या बुरी हो, जब माँ का साथ रहता

है, और माँ शिक्षक की तरह हमारे साथ मौजूद रहती है, वह अपने बच्चों के लिए ईश्वर से भी भिड़ जाने का माद्दा रखती है, और तब ही 'मैं कभी नहीं मानूँगी हार' जैसी कविता का जन्म होता है।

इस कविता संग्रह में 'ज़िंदगी की ठोकरें', 'अपने बदल गए', 'तेरा जहां', 'एक तलाश' और ज़िंदगी की खुरदरी सच्चाई 'ज़िंदगी की सलीब' भी मौजूद है। 'अरे ओ बंधु! मेरे' कविता में जहाँ जीवन को जीने की कला, और एक मानव के तौर पर शुभकामनाओं का एक गुलदस्ता पेश किया है, उसी तरह 'क्या करूँ' कविता में हमारे जीवन की ऊहापोह की तरफ संकेत करने का प्रयास किया गया है। हमारा जीवन 'फूल और काँटों' का एक अनूठा सम्मेलन है। इस बात की तस्दीक कवयित्री की अनेक रचनाओं में देखने को मिलती है।

मनुष्य जीवन को अगर कोई ऊर्जा देने वाली केबल है, तो वह उसके रिश्ते ही हैं, हमें अपने जीवन में इन रिश्तों को समझने की जरूरत है। इन रिश्तों की समझ से दूर हो जाने के कारण, और भले ही मनुष्य अपने दो पैरों पर खड़े होने के कारण मानव कहलाता हो, लेकिन उसके जीवन में पशुता की उपस्थिति सदैव बनी रहती है। यह बहुत जरूरी है कि जीवन को भली प्रकार से जीने के लिए हम, अपने जीवन के केंद्र में किसी अपने प्रिय को आवश्य रखें। 'एक मात्र केंद्र' कविता मे। हमें जीवन के प्रति समर्पण के दृष्टिकोण के अद्‌भुत दर्शन होते हैं। लेकिन यह हमें तभी समझ आता है, जब हमने 'रिश्तों की गहराइयाँ' जान ली हों। अक्सर हमारे सामने स्वयं से लड़ने की चुनौतियां जीवन में मुँहवाये खड़ी रहती हैं, और ऐसे में 'कैसे मनाएँ दिल को' जैसी कविता का निर्माण होता है। इसके साथ ही यह संग्रह 'टूटने की चुभन' की बात भी करता है, तो 'ज़िंदगी और मुखौटे' भी कवयित्री के दर्शन से अछूते नहीं रहे हैं।

अगर इस कविता संग्रह के विषय में मैं लिखूँ तो शायद कविताओं में लिखी कहानियों को आपके सामने लाते हुए मेरी अपनी भूमिका ही बहुत विस्तृत हो जाएगी। अतः यह शब्दों को महसूस कर जीवन की अनुभूति का काम पाठक के लिए छोड़ देना ही बेहतर विकल्प होगा। हर एक पाठक अपने जीवन अनुभव से इन कविताओं को जाँचने के लिए स्वतंत्र होना

ही चाहिए। अपने अनुभव के रेजोनेन्स में ही वह 'आह' अथवा 'वाह' कह सकता है। उसपर मैं प्रतिबंध नहीं लगाना चाहूँगा। आपके अपने मन के फूल या काँटे चुनने का अधिकार, आप पाठकों का है। कविताओं की असल समालोचना तो पाठक का अधिकार है, अतः ये काम मैं आप सुधि पाठकों को ही सौंपता हूँ।

मैं बड़ी बहिन बिमला रावर सक्सेना जी को, इन कविताओं के लिए और नए रूप में जीवन के अनुभवों के द्वारा ज़िंदगी के मुखौटों के अनावरण पर और शब्द रूप में अवतरण पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भवतु सब्ब मंगलम।

केदारनाथ शब्द मसीहा
नई दिल्ली

अनुक्रम

क्रम सं०		पृष्ठ संख्या
1	माँ तुझको हम करते वन्दन	13
2	प्रथम गुरू होती माता	14
3	ईश्वर का रंगमंच	15
4	अस्तित्व की लड़ाई	16
5	मैं कभी नहीं मानूँगी हार	17
6	दुनिया का रिश्ता बाज़ार	18
7	हम तरस गए	20
8	यही जी चाहे	21
9	अपने बदल गये	22
10	ज़िन्दगी की ठोकरें	23
11	तेरा जहाँ	24
12	कुछ छूट जाता	25
13	एक तलाश	26
14	ज़िन्दगी की सलीब	27
15	हसरतों के ख़्वाब	28
16	कितने युगों के बाद	29
17	क्या करूँ	30
18	अरे ओ बन्धु! मेरे	31
19	यादों में उनकी	32
20	कुछ पंक्तियाँ	33
21	फूल और काँटे	35
22	क्या ख़ता	36
23	रौशनी की किरण	37
24	एक मात्र केन्द्र	38
25	आघात	39
26	कोई किरण	40
27	रिश्तों की गहराइयाँ	41
42	कौन संदेशा	28
43	कैसे मनायें दिल को	29
44	टूटने की चुभन	30
45	निशानियाँ उनकी	31
46	ज़िन्दगी और मुखौटे	32
47	एक दिन फिर	33
48	बीते हुए दिन	34
49	ग़म के गाने	35
50	बहकती है ज़िन्दगी	36
51	जीवन रस	37
52	बहुत हैं	38
53	दिल की हालत	39
54	संगदिल	40
55	पलकों के दरवाज़े	41
56	अप्रत्यक्ष डोरियाँ	42
57	सुधियों के दर्पण में	43
58	ख़ुशी तो छुपी बैठी थी	44
59	ये रिश्ते	45
60	पगली पायलिया	46
61	श्वेत श्याम	47
62	मित्रता निभाओ	48
63	पीछे छोड़ने का दुख	49
64	धीमी-सी मुस्कुराहट	50
65	प्रीत की रीत	51
66	आम आदमी का हिस्सा	52
67	यह प्रश्न है तुम्हारे लिये	53
68	मेरी हँसी ही	54

55 लपटें और रेशमी सपने 69
56 अम्मा का नन्दलाला 70
57 आँखों का मरहम 71
58 एक उम्मीद 72
59 सागर तीरे 73
60 बाँट दे उजाले 74
61 काश होता कोई 75
62 प्यारी-सी यादें 76
63 रिश्तों की चादर ओढ़कर 77
64 इक पगला-सा प्यार 78
65 कुछ हमारी सुनिये 79
66 आघात मेरे 80
67 न तुम हार जाना 81
68 कैसे बन जाते हैं नाते 82
69 गोरी चाँदनी साँवला सागर 83
70 कविता क्या है 84
71 ये लम्हे क्यों 85
72 आँसुओं की भाषा 86
73 बहे जा रहे हैं रिश्ते 87
74 एक छेद भी नहीं 88
75 कैसी विडम्बना रही 89
76 जीने के किस्से 90
77 कालिदास के मेघदूत 91
78 ओ! काले मतवाले बादल 92
79 विश्वास की बुनियाद पर 93
80 क्या इतना आसान है 94
81 बादल के आँसू 95
82 एक साँस का फासला 96
97 सौगात क्या तुम दे गए 83
98 मैं तो हूँ राही परदेसी 84
99 बरसो मोरे अँगना 85
100 ऊषा रानी मुस्कुराती आई 86
101 आँखों में दर्द लिये 87
102 मीरा सी दीवानी 88
103 अपनों के सपने 89
104 सपनों के सुख 90
105 बीते पल 91
106 कुछ मिर्चें कुछ बम 92
107 कुछ सुन्दर सपने 93
108 तू भूल जा दिल 94
109 दर्द की गर्द 95
110 उसकी आवाज़ 96
111 प्रकृति का कहना 97
112 अपनी ही नज़रों में 98
113 इन्द्र धनुष का हार 99
114 अपने ढंग के अन्धे 100
115 हैं अभी फर्ज़ बाकी 101
116 सम्बन्धों की सरगम 102
117 आत्मा से आत्मा का रिश्ता 103
118 काग़ज़ के दिल में भर दिया 104
119 सागर से मिल जातीं 105
120 जब करते तदबीर 106
121 कुर्सी की लकड़ी 107
122 गाण्डीव की धार 108
123 हाँ मैं बेटी हूँ 109
124 विदेह 110

माँ तुझको हम करते वन्दन

हे! विद्यादयिनी देवी तू देती विद्या का दान है
ज्ञानदयिनी हँसवाहिनी तू करती कल्याण है
तेरी कृपा जब हो जाती माँ विद्याधन मिल जाता है
विद्याधन जब मिल जाये तब जन्म सफल हो जाता है
ज्योति कला की जब जलती तब कलाकार बन जाता है
छन्द ज्ञान के बल पर मानव गीतकार बन जाता है
बन जाता संगीतकार जब वीणा का तार बज जाता है
तेरी वीणा के तारें पर ही मानव सुर में गाता है
जीवन के हर पग पर ममता तेरा ही वरदान है
स्पन्दन मर कर नवजीवन दो हम बालक नादान हैं
याचक तेरे हैं हम माता करते तेरा गान हैं
सुन लो करूण हमारा क्रन्दन हम तेरी सन्तान हैं
तेरी कृपा से होता माता जीवन में उत्थान है
तू ही नित साहस देती है जीवन नित अभियान है
तम तमिस्त्र को दूर भगाती हरती तू अज्ञान है
तू ही कला साहित्य संस्कृति और तू ही विज्ञान है
जीवन के हर दीप में माता तेरी ज्योति जलती है
तेरी कृपा जब हो जाती तब ज्ञान की ज्योति जलती है
माँ तुझको हम करते वन्दन यही कामना एक है
रहना वहाँ तू संग हमारे जहाँ भावना नेक है
ज्योति तुम्हारी साथ हमारे नहीं कोई हमको भय है
तेरा विजय छत्र जब सिर पर जग पर पूर्ण विजय जय है
देश विदेश कहीं हों माता किन्तु अगर तू साथ है
तू करती है पथ प्रशस्त फिर कोई नहीं अनाथ है

(२)

प्रथम गुरू होती माता

हर बच्चे की प्रथम गुरू, होती है माता
बच्चे का और माता का, जन्मों का नाता
प्रभम शब्द जो बच्चा बोले, वह होता है माँ
कहीं से भी माता को पुकारे, माँ कहती है हाँ
दुनिया में कैसे रहना है, माँ ही उसे सिखाती
दुनिया के हर रंग-रंग को, माँ ही उसे दिखाती

माँ की ऊँगली पकड़ के बच्चा, डगमग-डगमग चलता
वही कदम जब होता बड़ा, तब पूरे जग में चलता
रात में लोरी उसे सुनाकर, मीठी नींद सुलाती
जागो मोहन प्यारे गाकर, रोज़ सुबह है जगाती
पूरे दिन का कार्यक्रम तो, माता ही है सिखाती
हर पल का सदुपयोग है करना, माँ ही उसे बताती

घर के नियम परिवार की बातें, कैसे क्या करना है
सदा सत्य के मार्ग पे चलना, कभी नहीं डरना है
खाना-खेलना, पढ़ना-लिखना, ईश्वर में विश्वास
माँ ही उसे सिखाकर भरती, जीवन में उल्लास
सुख-दुख में सबके संग रहना, मानवता का पाठ
माँ ही उसे पढ़ाती रहती, रोज़ सदा दिन-रात

माँ की सीख उम्रभर रहती, हर बच्चे को याद
इसीलिये भूले न कभी, माँ के भोजन का स्वाद
माँ की हर इक सीख पे चलता, अच्छा बनकर रहता
माँ के आगे बड़ा होकर भी, बच्चा बनकर रहता
माँ की अच्छी सीख से बच्चा, जीवनभर सुख पाता
हर बच्चे की प्रथम गुरू होती है उसकी माता

(3)

ईश्वर का रंगमंच

तरह-तरह के लोग हैं इस दुनिया में
ईश्वर के इस रंगमंच पर
रंग-रंग के पात्र हैं इस दुनिया में
कोई मीठा, कोई सीठा
कोई फ़ीका, कोई तीख़ा
कोई मधुर है, कोई तीता
कोई पलता, कोई मोटा
कोई लम्बा, कोई छोटा
कोई लड़ाकू, कोई भोला
कोई शाँत, कोई बम का गोला
कोई पढ़ाकू, कोई अनपढ़
कोई चतुर है, कोई अनगढ़
कोई गोरा, कोई काला
कोई मखमल, कोई भाला
कोई साधू, कोई फ़कीर
कोई ग़रीब है, कोई अमीर
कोई जन्मजात अभिनेता
कोई बचपन से ही नेता
पक्का इन दोनों का रिश्ता
नेता तो होता अभिनेता
अभिनेता बन जाता नेता
कहते इसको राजनीति हैं
रंगमंच और मंच की भैया
इक-दूजे से बड़ी प्रीति है

(4)

अस्तित्व की लड़ाई

आजकल एक नई समस्या का उद्‌भव बड़ी तेज़ी से हो रहा है
हर इन्सान जब तब अपने अस्तित्व के लिये रो रहा है
सबको अपना अस्तित्व ख़तरे में लग रहा है
अपना अस्तित्व बचाने के लिये देश में
एक अँधी रौशनी का तेज़ दिया जल रहा है
देश के हर प्रदेश, जाति, धर्म, वर्ग को
देश की हर भाषा को भयंकर डर है कि
उनका अस्तित्व समाप्त होने में पलभर है
कोई नहीं समझ पा रहा यह झूठा डर कहाँ से आया
किसने भारत की एकता में यह ग्रहण लगाया
हमारी इतनी प्राचीन सभ्यता में ये दुर्भावना के बीज किसने बो दिये
कैसे हमने प्रेम, सहिष्णुता, सहानुभूति, नम्रता
दिलों के सारे भाव खो दिये
हज़ारों वर्षों से भारत में बाहर से लोग आते रहे
हम ख़ुशी से उन्हें अपनाते रहे
मुग़ल आये और यहाँ अपना राज्य भी स्थापित कर लिया
आपसी फूट और स्वार्थ के कारण राजा देश को बचा नहीं पाये
भारतीय सोने की चिड़िया भारत को लूटने आये अंग्रज़ों के गुलाम बन गये
पारसी आये जो अपने अस्तित्व के साथ रचे-बसे हुए हैं
उनसे दादाभाई नौरोजी, टाटा, मामा जैसे हीरे भारत ने पाये
किसे शरण नहीं दी हमारे देश ने
कोई दोस्त बन कर आया कोई दुशमन के वेश में
अफ्रीकी, अफगानिस्तानी, चीनी, बंग्लादेशी
सब चैन से रह रहे हैं किसी की आज़ादी नहीं छीनी
शायर इक़बाल ने सच ही कहा था
''यूनान औ मिस्त्र रोमाँ सब मिट गये जहां से

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी''
भारत की हज़ारों वर्ष पुरानी संस्कृति-सभ्यता वापिस लाने के लिये
अनगिनत भारतवासियों ने देश पर प्राण न्यौछावर कर दिये
अँग्रेज़ गये भारत में लोकतन्त्र आया
लेकिन ये किसने आज युवाओं को भड़काया
क्यों आज सबको अपनी आज़ादी का डर लग रहा है
क्यों आज लोगों को अपना अस्तित्व ख़तरे में लग रहा है
आज खोजना है हमें इस समस्या का निदान
वरना बच न पायेगी हमारे भारत की शान
सत्ताधारी और विपक्ष संसद में बैठने वाले दो शत्रु नहीं होते
दोनों ही देश के रक्षक होते हैं
उनकी आपसी लड़ाई, स्वार्थ, अहँकार, अवांछित हरकतें करना
जनता में डर और असंतोष पैदा करता है
'यथा राजा तथा प्रजा' का मुहावरा
आज का भारत साकार और स्वीकार करता है
हृदय उद्विग्न हो उठता है कि अस्तित्व की यह झूठी लड़ाई
कभी सच्चाई में न बदल जाये
अभी किसी का अस्तित्व नहीं है ख़तरे में
कहीं धीरे-धीरे मुड़ न जायें ये भाव असली बदले में
तब रह जायेगा किसका महत्व, बच पायेगा किसका अस्तित्व?
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में सब भाई-भाई
मानने वाले भारत में आज क्यों हो रही है वर्चस्व की लड़ाई
दूसरे को नीचा दिखा कर या मार कर नहीं
अपितु ख़ुद को ऊँचा बना कर पहुँच पाओगे कहीं
प्रेम से एकजुट होकर भारत को बचाओ तभी पाओगे बड़ाई
छोड़ दो भूल जाओ यह झूठी अस्तित्व की लड़ाई

(5)

मैं कभी नहीं मानूँगी हार

मैं तब स्तम्भित हो उठती हूँ
जब मैं समझ नहीं पाती कि
मैं विधना के आगे झुक जाऊँ
विधि को अपना विधान मानकर कुछ न कर पाऊँ
सब कुछ भूलकर वह जो कहे करती जाऊँ
भूल जाऊँ उन ऊँची उड़ानों को
क्षितिज के मनभावन आकर्षण को
अपने बड़े-बड़े स्वप्नों को
अम्बर तक छूने के सपनों को
और नाचती जाऊँ उन उँगलियों पर
जो मुझ पंछी के पर कतरना चाहती हैं
मेरी ऊँची उड़ानों को आकाश तक नहीं अपितु
रसातल में भेज देना चाहती हैं
मेरे अरमानों पर अँकुश लगाना चाहती हैं
कलाओं के प्रति मेरी चाह को छिन्न-भिन्न कर देना चाहती हैं
मेरे टुकड़े-टुकड़े कर मुझे भू लुंठित कर देना चाहती हैं
लेकिन मैं इस सब को भूलकर, एक नई राह पर मुड़कर
एक नई उड़ान भर कर उड़ जाना चाहती हूँ
क्षितिज के उस पार जहाँ है एक नया संसार
इन दिनों को बना देना चाहती हूँ अतीत
गाना चाहती हूँ कुछ नये गीत
जीना चाहती हूँ उन स्वप्नों के लिये
कुछ करना चाहती हूँ अपने और अपनों के लिये
अपने समाज और अपने देश के लिये
आज मैं चल पड़ी हूँ एक अटल निश्चय के साथ
विधना को मुझे आगे बढ़ाना होगा थाम कर मेरा हाथ
नहीं मैं कभी नहीं मानूँगी हार

(6)

दुनिया का रिश्ता बाज़ार

आइये-आइये! आपको दिखायें दुनिया का एक बड़ा बाज़ार
यह बाज़ार पूरी दुनिया में फैला हुआ है
यह बाज़ार सीमाहीन है हर जगह है इसका विस्तार
दुनिया के इस बाज़ार में बिकते हैं रिश्ते
जो अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ और हैं दिखते
जी हाँ, हर तरह के रिश्ते प्यार के रिश्ते, ममता के रिश्ते
दुनिया की हर भाषा में पुकारे जाने वाले सारे रिश्ते
घृणा, जलन, क्रोध भरे कुण्ठा वाले और उदास रिश्ते
ने लेना न देना जब मिलो खुल के मिलो वाले बिंदास रिश्ते
एक पल घी-खिचड़ी, दूसरे पल तू कौन, मैं कौन वाले रिश्ते
बगल में छुरी मुँह में राम वाले रिश्ते
बदलते नक़ाब वाले रिश्ते
नज़दीकियों और दूरियों वाले रिश्ते
कभी दिल के नहीं अपितु मजबूरियों वाले रिश्ते
आस्तीन में पाले साँप जैसे विश्वासघाती रिश्ते
जब तब बेबात आघात करने वाले रिश्ते
सगे और सौतेले, ख़ून से जुड़े या मुँह बोले रिश्ते
अटके हुए, भटके हुए, लटके हुए रिश्ते
स्वार्थी और परमार्थी रिश्ते
लोग खरीदते हैं पसंद के रिश्ते, सिर्फ़ छोड़कर ख़ून के रिश्ते
यह सबका अपना-अपना भाग्य है किसे कौन-सा रिश्ता मिलता है
प्यार करने वाला या व्यंगबाण मारने वाला
जिनकी जीभ की तलवार असली तलवार से भी तेज़ होती है
और जनाब इस बाज़ार में रिश्तों के साथ-साथ
जज़्बातों की बिक्री फ्री में होती है
तो देखा आपने दुनिया का रिश्ता बाज़ार
जो रिश्ता पसंद हो ले जाइये
खुला है पूरा रिश्ता बाज़ार

(7)

हम तरस गए

कहने को दिल की दास्ताँ
हम ऐ ख़ुदा तरस गए
दिल में छुपाये हाले दिल
जाने ही कितने बरस गए
किसको दिखायें दिल के दाग़
कौन छुपायेगा उन्हें
तंज़ से हँस के चल दिये
समझे थे अपना हम जिन्हें
दर्द और ग़म के नाग ही
आ-आ के हमको डस गए
घबरा के हम सिमट गए
जितनी मिलीं ये रूसवाइयाँ
सीने में जितने ग़म बढ़े
उतनी बढ़ीं ये तनहाइयाँ
दर्दे जिगर को चीर के
दो बूँद आँसू बरस गए
कहने को दिल की दास्तां
हम ऐ ख़ुदा तरस गए

(8)

यही जी चाहे

आओ इक दिन पास हमारे
तुमसे मिलूँ यही जी चाहे
आ बैठो तुम पास हमारे
मिल कर दुनिया नई बनायें
मिल कर एक ग़ज़ल लिख डालें
एक नई धुन मिल कर गायें
रोज़ लिखो तुम नया गीत
मैं गाऊँ गीत यही जी चाहे
मैं मुस्काना भूल गई हूँ
तुम आओ मैं हँसती जाऊँ
मेरी ख़ुशियाँ रूठ गई हैं
तुम आओ मैं ख़ुशियाँ पाऊँ
बैठो तुम सब सुनो ध्यान से
बातें करूँ यही जी चाहे
जब से छोड़ गए तुम मुझको
मेरी दुनिया हुई अँधेरी
मेरे सुख पर पड़ी हुई है
दुःख की बदली बड़ी घनेरी
अँधियारे से उजियारे में
जाऊँ, रहूँ यही जी चाहे
आओ इक दिन पास हमारे
तुमसे मिलूँ यही जी चाहे

(9)

अपने बदल गये

जलती रही शमा तो
परवाने जल गये
यूँ साथ-साथ वक़्त के
अपने बदल गये
सब कुछ लुटा के अपना
बदले में क्या मिला
हमने तो बाँटा अमृत
हमको ज़हर मिला
हमने वफ़ा के नाम पर
खुद को मिटा दिया
उस बेवफ़ा की याद में
कुल जहां लुटा दिया
रातों की नींद छीनकर
सोया वो चैन से
आँसू तलक भी ले गया
वो मेरे नैन से
आये तो एक बार
हमें देखे प्यार से
शायद कभी वो लौटें
मेरे दिन बहार के
जल-जल के अपने दिल में
खुद ही बहल गये
जलती रही शमां तो
परवाने जल गये

(10)

ज़िन्दगी की ठोकरें

ज़िन्दगी की कठोर ठोकर से,
शीशा-ए-दिल जो चकनाचूर हुआ
हाले दिल तुझको क्या बताऊँ मैं
क्यों निशाना ये बेकसूर हुआ

ज़िन्दगी सत्य है या सपना है
आज तक मैं समझ नहीं पाई
कौन दूजा है कौन अपना है
आज तक यह समझ नहीं आई

ज़िन्दगी एक नाम जीने का
इसलिये हम भी जिये जाते हैं
मुँह से उफ तक कभी नहीं करते
ज़हर के घूँट पिये जाते हैं

ज़िन्दगी में हज़ारों भूलें की
सैंकड़ों पाप भी किये मैंने
घाव रिस-रिस के जब लहू निकला
ज़ख़्म ख़ुद आप ही सिये मैंने

जीने के चक्कर में पिस गई ज़िन्दगी
दुनिया की ठोकरों से घिस गई ज़िन्दगी
चूक गया जीवन कुछ हाथ नहीं आया
बूँद-बूँद कर-कर के रिस गई ज़िन्दगी

(11)

तेरा जहां

वक़्त ने सिखला दिया धोख़ा मुझे
अब यकीं मुझको न अपने पर रहा
धुल सके न दाग़ दिल के अब तलक
क्या कहूँ, किससे कहूँ, कैसे कहूँ
क्या सहा, कैसे सहा, क्यों कर सहा
कोई क्या समझे मेरे जी की जलन
है कठिन कितना भला जीना यहाँ
आसमाँ वाले भुलावे में न रख
है नहीं मेरे लिये तेरा जहाँ
ऐ ख़ुदा इतनी दया अब और कर
चैन से जी लूँ जहां, अब भेज दे मुझको वहाँ
या फिर जितने दर्द तेरे पास हैं
दे मुझे, अब दे न तू कोई दुआ

(12)

कुछ छूट जाता

सबको सब कुछ तो कभी
मिलता नहीं है ज़िन्दगी में
कुछ मिला
कुछ छूट जाता ज़िन्दगी में
याद करते हम जिन्हें दिन-रात रहते
याद में जिनकी
जहन्नुम में हमारे दिन गुज़रते
वो हमें पलभर में
ऐसे हैं भुलाते
जैसे पानी के बताशे
एक पल में फूट जाते
ऐसे ही कुछ लोग मिलकर
रूठ जाते ज़िन्दगी में
मंज़िलों के रास्ते
कैसे अचानक
मिलते-मिलते
घुप अँधेरी वादियों में
डूब जाते
या कभी जब
भग्य के उपहास से
अपने ही साये से
बिछड़ हम टूट जाते हैं
ऐसे ही कुछ क्षण
चले आते हैं
सब कुछ लूट जाते ज़िन्दगी में
कुछ मिला कुछ छूट जाता ज़िन्दगी में

एक तलाश

जो हमारे दिल को समझ सके
हमें उस नज़र की तलाश है
जो सुकून औ राहत दे सके
हमें उस मेहर की तलाश है

मेरे पाँव काँटों पे चल रहे
मेरे दिल के घाव न भर रहे
जो ख़ुशी और प्यार की दे ख़बर
उसी नामाबर की तलाश है

कभी जागते कभी ख़्वाब में
मैंने ज़िन्दगी को आवाज़ दी
मेरी मंज़िलों को मिला सके
मुझे उस सफ़र की तलाश है

अगर फिर भी कुछ न मैं पा सकूँ
तो भला मैं जी के भी क्या करूँ
जो सुला दे चैन की नींद में
मुझे उस ज़हर की तलाश है

कभी तीर हँस के सहा किये
कभी फूल खा के भी रो दिये
जो दे रौशनी मेरी रूह को
मुझे उस सहर की तलाश है

मेरी ज़िन्दगी को सँवार दे
कुछ रोज़ को तो बहार दे
मेरे सर पे प्यार से दे थपक
मुझे उस मेहर की तलाश है

जो हमारे दिल को समझ सके
हमें उस बशर की तलाश है

(14)

ज़िन्दगी की सलीब

तुझे क्या बताऊँ ऐ हम सफ़र
ये सफ़र भी कितना अजीब है
जो चला गया हमें छोड़कर
वही दिल के सबसे करीब है

किये मंज़िलों के थे वायदे
सरे राह छोड़ चला गया
जिसे दिल दिया और जान दी
वही मुँह को मोड़ चला गया

मैंने सब दिया बस ग़म लिया
ये तो अपना-अपना नसीब है
तुझे काटना तो है ज़िन्दगी
पर तू नहीं मेरी ज़िन्दगी

तूने मुझसे उसको जुदा किया
जो मेरा ख़ुदा मेरी बंदगी
सब खो दिया पर जी रहे
ये तो ज़िन्दगी की सलीब है

जो चला गया हमें छोड़कर
वही दिल के सबसे करीब है

(15)

हसरतों के ख़्वाब

कुछ हसरतों से हमने
कुछ ख़्वाब बुन लिये थे
कुछ ख़्वाब हमने अपने
नायाब चुन लिये थे
यूँ तो हमेशा हमने
मायूसियाँ ही पाईं
दुनिया में कोई अपना
देता नहीं दिखाई
उलझे रहे हमेशा
अपने ही जाल में हम
बैठे रहे हमेशा
इक टूटी डाल पे हम
दाग़-ए-जिग़र किसी को
हमने नहीं दिखाया
ख़ुद दूर कर दिया है
अपने से अपना साया
हमने कभी न माँगे
किस्मत से चाँद तारे
हमने ख़िज़ाँ को चूमा
माँगी नहीं बहारें
कुछ हसरतें दफ़न थीं
दिल में कहीं हमारे
उनके दबे-दबे से
अफ़साने सुन लिये हैं
उन हसरतों से हमने
कुछ ख़्वाब बुन लिये हैं
कुछ ख़्वाब हमने अपने
नायाब चुन लिये हैं

(16)

कितने युगों के बाद

कितने युगों के बाद हम, आज हैं गुनगुना रहे
कुछ मन की सुन रहे हैं, कुछ मन को हम सुना रहे

कहने को तो बहुत था पर
कहने से भी क्या फायदा
अपने को क्यों सतायें हम
ये कौन-सा है क़ायदा

दिल को न अब सतायेंगे, ख़ुशियों को हम बुला रहे
कितने दिनों के बाद हम, आज हैं गुनगुना रहे

किस-किस के ग़म का दें सिला
दुनिया से हमको क्या मिला
जाम उठा खुशी का अब
ख़ुद ही को आज लें पिला

ख़ुद से तो सुर्ख़रू हों हम, ख़ुद से न कुछ गिला रहे
कितने युगों के बाद हम, आज हैं गुनगुना रहे

17

क्या करूँ

मैं तड़पती रही ज़िन्दगी के लिये
मौत भी आई न पास तक क्या करूँ?
दिल को रौंदा गया अरमाँ कुचले गये
हाय किस आस में फिर भी जीते गये
ज़िन्दगी मौत के फासले नापती
मैं खड़ी ही रही बीच में क्या करूँ?
अपनी हालत पे रो-रो के भी हँस दिये
कैसे आ जायेगी मौत भी बिन जिये
किस्मतों के ख़ुदा तू ही मुझको बता
अपनी किस्मत पे रोऊँ हँसूँ क्या करूँ?
कितने शिकवे लबों पर लरज़ते रहे
बिन कहे जुल्म हम सबके सहते रहे
हमने ख़ुद को भी ज़िंदा दफ़न कर दिया
दफ़न रहने भी न दें तो मैं क्या करूँ?
किससे शिकवा करें बेबसी का सनम
क्या नज़ारा मेरी बेकसी का सनम
मेरी नाकाम हसरत की परछाइयाँ
मेरा पीछा न छोड़ें तो मैं क्या करूँ?
मंज़िलें खो गईं हम पिछड़ते रहे
जाने किस मोड़ पर सब बिछड़ते रहे
किसको अपना कहूँ, किससे मन की कहूँ
कोई सुनना न चाहे तो मैं क्या करूँ?

(18)

अरे ओ बन्धु! मेरे

तुम्हारे पंथ के काँटे अगर
मिल जायें मुझको
जन्म हो जाये सफल मेरा
अरे ओ बन्धु मेरे
इष्ट तेरे पूर्ण हो जायें
न देखे तू निराशा
हो प्रशस्त सुपथ
न रह जाये दुराशा
मंज़िलें मेरी बहुत हैं दूर मुझसे
किन्तु तेरे लक्ष्य यदि
मिल जायें तुझको
धन्य हो जाये जनम मेरा
अरे ओ बन्धु मेरे
उन्नति के शिखर पर पहुँचे अगर तू
धन्य हो जाये पतन मेरा
अरे ओ मीत मेरे
मुस्कुराता पथ पर बढ़ जा अकेला
देख मत मुड़ कर गमन की शुभवेला
छिन गई पगडण्डियाँ भी आज मेरी
किन्तु यदि मिल जाये तुझको राह तेरी
धन्य हो जाये जनम मेरा
अरे ओ बन्धु! मेरे
फूल मिल जायें तुझे और शूल मुझको
धन्य हो जायें चरण मेरे

अरे ओ सुहृद मेरे
एक भी रेखा न चिंता की
तुझे आकर सताये
बाँट तेरे जो लिखे हों दुःख के क्षण
आयें मेरे पास
न तुझको रूलायें
सुख का तो मोह भी न
शेष है अब
किन्तु यदि देखूँ तुझे
सुख से विचरता
धन्य हो जाये जनम मेरा
अरे ओ बन्धु! मेरे
तुम्हारी आँख के आँसू
अगर मिल जायें मुझको
धन्य हो जायें नयन मेरे
अरे ओ बन्धु! मेरे

(19)

यादों में उनकी

यादों में उनकी डूब के, घबरा के पी गया
चेहरा किया जो याद तो शरमा के पी गया

शिकवा न उनसे कोई है, न हैं कोई गिला
उनका ख़्याल आया तो मुस्का के पी गया

दर्दे जिगर तो पी ही गये, घोल मय में हम
दिल की हर एक टीस को बहका के पी गया

वो बेवफ़ा बने रहें, हम बेवफ़ा रहें
अपना इरादा याद कर, इतरा के पी गया

मज़बूरियाँ भी उनकी शायद कोई रहीं
दिल और दिमाग़ को यूँ समझा के पी गया

कोई हमें सताये क्यों और कोई क्यों मनाये
हर रिश्ते, नाते, प्यार को ठुकरा के पी गया

(20)

कुछ पंक्तियाँ

राम नाम सत्य की आवाज़ें सुनीं तो आँख भर आई
तभी सुनी कहीं दूर बजती शहनाई
दिल में ख़यालातों का उमड़ा अम्बार
ऐ जहां वाले क्या यही तेरा संसार
एक ही समय में किसी को दे रहा आँसू
किसी को दे रहा ख़ुशियों का उपहार

अभी उजड़ा किसी का चमन
अभी महका किसी का गुलिस्ताँ
अभी लुटा किसी का आशियाँ
अभी बसा किसी का परिस्ताँ
कहीं कोई हँसता लगा कर ठहाके
छुप कर कोई रोये आहिस्ता-आहिस्ता

कहीं महके हुए सेहरे की कलियाँ मुस्कुराती हैं
कहीं बहके हुए हारों की किरणें झिलमिलाती हैं
कहीं रौंदे हुए फूलों की आहें बिलबिलाती हैं
कहीं जाते जनाज़े पर ये कलियाँ खिलखिलाती हैं
ये सब कुछ देख कर ऐ दोस्त सर चकरा गया मेरा
ये दुनिया खेलती है या इसे क़िसमत खिलाती है
किसी को अमृत देती है किसी को विष पिलाती है

(21)

फूल और काँटे

दुनिया क्या है
किस्मत का खेल है
सभी की किस्मत में
कहीं न कहीं मेल है
भगवान ने तो बाँटे
फूल और काँटे
किसी को हुआ लाभ
किसी को पड़े घाटे
किसी को अधिक, किसी को कम
पर दिये तो सभी को
फिर काहे का ग़म
अपने-अपने हिस्से के, फूल और काँटे
तुम्हें ख़ुद ही चुनने हैं
अपने हिस्से में आये
स्नेह प्यार के शब्द
या
ताने और व्यंग
सब तुम्हें ख़ुद ही सुनने हैं
कर सकते हो तो इतना करो
कि फूल सबके साथ बाँट लो
और काँटे
सिर्फ़ अपने दामन में समेट लो
शायद कभी यही काँटे
फूल बनकर
तुम्हारे दामन को
ख़ुशियों से भर दें

(२२)

क्या ख़ता

सनम तुम हमसे मिलने पर
निगाहें क्यों चुराते हो
कोई तो बात है ऐसी
जो तुम हमसे छुपाते हो
कभी वो दिन भी थे
जब हम तुम्हारे, तुम हमारे थे
कभी दिन-रात ही हम
एक दूजे के सहारे थे
हुआ ये क्या अचानक
तुम न अब हमको बुलाते हो
कहाँ वो वायदे कसमें
कभी तुमने जो खाये थे
कहाँ सपने सुनहरे
जो कभी तुमने दिखाये थे
हुए कैसे पराये हम
हमें तुम क्यों सताते हो
मेरी दुनिया में करके यूँ अँधेरा तुम कहाँ सोये
तुम्हें मालूम क्या हम रात दिन बादल से हैं रोये
कभी खुशियाँ हमें दी थीं हमें अब क्यों रूलाते हो
तुम्हारी बेरूखी ने तोड़ डाला दिल-ओ-जिग़र मेरा
तुम्हें देखे बिना तो हो गया जीना ज़हर मेरा
हुई हमसे ख़ता क्या
जो हमें तिल-तिल जलाते हो
कोई तो बात है ऐसी
जो तुम हमसे छुपाते हो

(23)

रौशनी की किरण

हवाएं चलीं ज़िन्दगी में कुछ ऐसे
कि हम ज़िन्दगी से ही कटते गये
घटाऐं घिरीं ऐसी काली घनेरी
कि हम टुकड़ों-टुकड़ों में बँटते गये
नहीं शायद दामन में हिम्मत थी इतनी
कि ख़ुशियाँ छुपा कर समेटे ही रखता
न ही किस्मतों के ख़ुदा को सहन था
कि दामन में मेरे वो ख़ुशियाँ भी भरता
किनारों की चाहत में तैरा किये पर
भँवर में ही गहरे धँसते गये
बहुत सोचा छुट जायें दुनिया के फँदों से
क़िसमत के जालों में फँसते गये
ख़ुशी किसको कहते, कभी भी न जाना
उमर सारी ख़ुशियाँ ही ढूँढा किये
अँधेरों के काले घने बादलों में
किरण रौशनी की हम ढूँढा किये

(24)

एक मात्र केन्द्र

तुम ही मेरे जीवन का
एकमात्र केन्द्र थे
मेरे जीवन की सम्पूर्ण परिधि
तुम्हारे आस-पास घूमती थी
मेरी आँखें तुम पर ही
केन्द्रित रहती थीं
अन्तर्पटल पर
केवल तुम्हारी आकृति चित्रित थी
मस्तिष्क में
केवल तुम्हारी ही बातें अंकित थीं
कानों में तुम्हारे ही शब्द गुंजित थे
मेरे हर भाव में
तुम्हारे ही भाव तरंगित थे
मैं तो तुम्हारी उपासिका थी
तुम्हारी कृपा की याचिका थी
फिर क्यों तुमने अचानक
मेरा साथ छोड़ दिया
क्यों तुमने
मुझसे मुख मोड़ लिया
मेरे सारे रास्तों का केन्द्र
एक तुम ही थे
तुमने एक ही केन्द्र से
इतने रास्ते
कैसे और क्यों निकाल लिये

25

आघात

कई रात करवट बदलते रहे हम
तेरे झूठ से ही बहलते रहे हम

कई बार सोचा ये दुनिया है धोखा
किसी पर यूँ कैसे करें हम भरोसा
मगर फिर न जाने क्यों विश्वास जागा
अँधेरा हृदय का कहीं दूर भागा

जला स्नेह का दीप अन्तर में मेरे
जगी ज्योति पावन सी जीवन में मेरे
मगर मैंने प्रतिदान तुमसे न पाया
हृदय पर भयंकर सा आघात पाया

ये तुमने लिया कैसा बदला है मुझसे
नहीं ऐसी आशा कभी की थी तुमसे
मेरे स्नेह का दीप तुमने क्यों तोड़ा
मेरी ज़िन्दगी को कहीं का न छोड़ा

बुरे देख सपने दहलते रहे हम
कई रात करवट बदलते रहे हम

(26)

कोई किरण

कहीं से कोई किरण
आ गई उजास की
कोई किरण बन गई
साँस मेरी आस की
आँखों को बरसों के
अँधियारे भूल गए
अन्तर में जगमग कर
उजियारे झूल गए
होता है अँधियारे के
बाद ही उजाला
कभी तो सुख पायेगा
मन दुख का पाला
घुल रहीं हवाओं में
गीत की लहरियाँ
मन में भी खनक रहीं
नृत्य की घुँघरियाँ
कोई हवा लाई है
बूँद मेरी प्यास की
प्यास अब बुझायेगी
प्यासी यह चातकी
कहीं से कोई महक
आ गई उल्लास की
कोई किरण बन गई
साँस मेरी आस की

(27)

रिश्तों की गहराइयाँ

दर्द बनकर सामने कुछ आ गई सच्चाइयाँ
दाग़ बनकर सामने कुछ आ गई अच्छाइयाँ

नेकियाँ कुछ कर चलें ऐसी तमन्ना दिल में थी
बन गईं पाताल से ऐसी मेरी ऊँचाइयाँ

जिन की ख़ातिर ख़ुद को भी भूले रहे सारी उमर
उन की यादें बन गईं हैं अब मेरी रूसवाइयाँ

जिस चमन के फूल बन कर महकना थे चाहते
अब न वो खुशबू रही है अब न वो उमराइयाँ

जो मेरे हमराज़ थे रूसवा वो मुझको कर गये
रोते-रोते बह गईं हैं आँख की बीनाइयाँ

ये हमारी बदनसीबी हमको समझा न कोई
हम निभाते रह गये रिश्तों की बस गहराइयाँ

(28)

कौन संदेशा

कौन संदेशा लाये चंदा कौन संदेशा लाये
बिछड़ गये जो मेरे अपने क्या उनकी सुधि लाये

लाख भुलाना चाहा जिनको याद वो हरदम आयें
मेरी यादों के जंगल में क्यों तू आग लगाये

धीमे-धीमे चुप का फसाना क्यों तू मुझे सुनाये
सुन कर तेरी चुप की भाषा आँखें अश्क बहायें

रग-रग में जो बसे हुए हैं कैसे उन्हें भुलायें
चंदा तेरी शीतल किरणें पल-पल हमें जलायें

यादों के झूले में जब तू आ कर हमें झुलाये
जी करता दो पल सुकून से अब हम भी सो जायें

चंदा तेरा नित-नित आना हमको रोज़ रूलाये
बिछड़ गये जो मेरे अपने क्यों न उन्हें संग लाये

(29)

कैसे मनायें दिल को

कैसे मनायें दिल को
कुछ न कह सब कुछ सहे जा
कैसे मनायें दिल को
जैसे लोग बहायें वैसे बहे जा
दिल कोई तथ्थर तो नहीं पत्थर
जिसे जैसे चाहो तराश लो
दिल तो सागर है
जिस में झाँककर कुछ तलाश लो
दिल तो आँखों से ही
बहुत कुछ कह जाता है
दिल का अक्स तो
चेहरे पे झलक जाता है
दिल की कहानी तो
दिल वाला ही समझ सकता है
दिल के आईने को
दिल वाला ही पढ़ सकता है
जो दिल के टूटने की आवाज़
सुन नहीं सकते
जो दिल के अहसास
महसूस नहीं कर सकते
कैसे कहें दिल से
जैसे वो कहें वैसे रहे जा
जैस वो बहायें वैसे बहे जा

(30)

टूटने की चुभन

घुटते हुए अरमान
टूटते हुए सपने
सब तरफ सुनसान
छूटते हुए अपने
ये किस मोड़ पर लाकर
ज़िन्दगी ने खड़ा कर दिया है
क्यों कभी ऐसे रिश्ते बन जाते हैं
जो न रहते हैं, न छूटते हैं
जिनके रहते दिल रोज़
हज़ार टुकड़ों में टूटते हैं
कभी-कभी ये रिश्ते फफोले बन जाते हैं
जो फूटने पर घाव में बदल जाते हैं
रिश्तों के दिये ये घाव
जल्दी नहीं भरते
ये तो हमेशा नासूर बन कर हैं रहते
टूटने की ये चुभन
रात दिन सताती है
ज़िन्दगी फिर भी चलती जाती है
हर तरफ वीरानी
सन्नाटों का अहसास
शोर सी लगती है अपनी ही साँस
ये किस मोड़ पर लाकर
ज़िन्दगी ने खड़ा कर दिया है

(31)

निशानियाँ उनकी

जब कभी बहुत बढ़ जाती हैं उदासियाँ दिल की
ले कर बैठ जाते हैं निशानियाँ उनकी
दिल को अकेले में सुनाते रहते हैं
बीती बातें और कहानियाँ उनकी
ख़ुद पे हँसते हैं, ख़ुद पे रोते हैं
देख भोली-सी नादानियाँ दिल की
वो तो नज़रें फिरा के दूर गए
कौन देखे ये वीरानियाँ दिल की
मेरी आवाज़ साज़ ले वो गए
ले गए साथ रागनियाँ दिल की
कोई सागर कहीं से आ जाये
और बुझाये ये चिंगारियाँ दिल की

(32)

ज़िन्दगी और मुखौटे

ज़िन्दगी क्या है
ज़िन्दगी मुखौटों का ही दूसरा नाम है
हर मुखौटा दूसरे से अलग होता है
पर ज़िन्दगी वही एक होती है
हम जहाँ जाते हैं
वहाँ का मुखौटा लगा कर चले जाते हैं
वापिस आकर उस मुखौटे को
बड़े यत्न से उतार कर
दीवार पर लगी कील पर टाँग देते हैं
और दूसरी जगह जाने के लिये
नया मुखौटा फिट करने लगते हैं
हाँफता काँपता मुखौटा
चेहरे पर दो इंच मुस्कान दिखाता मुखौटा
रोने वाला, हँसने वाला
या दार्शनिक सा गम्भीर मुखौटा
ज़िन्दगी एक
मुखौटे अनेक
हर नये मौके पर
नये मुखौटे की ज़रूरत रहती है
बेचारी ज़िन्दगी
जीने के लिये
रोज़ इन मुखौटों का बोझ सहती है
हर मुखौटे की अपनी एक कहानी होती है
पर इन मुखौटों के बिना भी
ज़िन्दगी बड़ी बेमानी होती है

33

एक दिन फिर

जाने क्या-क्या छिपा है
हाथों की लकीरों में
सब कुछ होते हुए भी इन्सान
ख़ुद को गिनता है फकीरों में
जाने क्यों वक़्त इन्सान को
उँगलियों पर नचाता है
क्षण भर में वक़्त तोते की
पुतलियों-सा बदल जाता है
बहुत-सी राहों से
गुज़रती है ज़िन्दगी
बहुत से चौराहों पर
ठहरती है ज़िंदगी
मंज़िल की राह में
बहुत से रोड़े हैं
ज़िन्दगी के पल-छिन
बहुत ही थोड़े हैं
किस क्षण में क्या हो जाये
जीवन की राह में
जाने ख़ुशी कब
बदल जाए आह में
फिर भी एक ताक़त
सबके अन्दर महकती है
उसके विश्वास पर ज़िन्दगी
एक दिन फिर चहकती है

(34)

बीते हुए दिन

याद आते रहते हैं पल-पल छिन-छिन
बहुत सताते हैं बीते हुए दिन
मन की वीणा का हुआ सूना संगीत
अधरों से रूठ गये क्यों मेरे गीत
अन्तर की प्रेम ज्योति बुझने लगी
ज़िन्दगी जाल सी उलझने लगी
तम में क्यों डूब गया भाग्य का गगन
रहता है मन हरदम उद्विग्न उन्मन
सपने भी आते डराते हुए
यादों के बादल रूलाते हुए
अम्बर से अग्नि झरे धरती वीरान
अन्दर और बाहर सब लगता सुनसान
बीत रहा जीवन यूँ घड़ियाँ गिन-गिन
बहुत सताते हैं बीते हुए दिन

(35)

ग़म के गाने

ग़म के गाने गा रहा दिल
ग़म भुलाने के लिए
याद उनको कर रहा
उनको भुलाने के लिए
कैसी किस्मत की लकीरें
दूर जिनको कर रहे
पास आ जाते हैं वो
हमको सताने के लिए
हम ख़यालों से भी जिनको
दूर रखना चाहते
रोज़ सपनों में दिखें
हम को रूलाने के लिए
देनी जिनको हमने चाही
दुनिया भर की हर ख़ुशी
छोड़ हमको चल दिए
आँसू बहाने के लिए
एक पर्दा आँसुओं का
आँख पर छाया हुआ
झाँकते उसमें से वो
हमको जलाने के लिए

(36)

बहकती है ज़िन्दगी

कितने खेल खिलाती है मुझको यह ज़िन्दगी
कितने खेल दिखाती है मुझको यह ज़िन्दगी
रूलाती है हँसाती है मुझको यह ज़िन्दगी
दहलाती है बहलाती है मुझको यह ज़िन्दगी
जो चाहे करवाती है मुझसे यह ज़िन्दगी
चाल पे चाल चलवाती है मुझसे यह ज़िन्दगी
पाप पुण्य सब कुछ करवाती है ज़िन्दगी
अपने पराये मुझसे बनवाती है ज़िन्दगी
रोज़ नई अदायें दिखाती है ज़िन्दगी
रोज़ नई हवायें चलाती है ज़िन्दगी
रोज़ मौत सामने दिखाती है ज़िन्दगी
मर-मर के जीना सिखाती है ज़िन्दगी
ज़िन्दगी से डरती हूँ ज़िन्दगी पे मरती हूँ
कैसे-कैसे मुझको बहकाती है ज़िन्दगी

37

जीवन रस

बरसों बरस
बहुत कुछ निभाया
बहुत कुछ सुना
बहुत कुछ सहा
पर शायद ही कोई पल
अपने लिये जिया
हमेशा ही ज़हर को
अमृत समझ कर पिया
ज़िन्दगी के दिन
रेत से झरते गये
हम चुपचाप अन्दर ही अन्दर
बिखरते गये
आज -
जब नदियों में न जाने
कितना जल बह गया
अनगिनत मौसमों का क़ाफ़िला
आया और चला गया
तो दिल चाह रहा है
कुछ दिन अपने लिये भी जिया जाये
कुछ तो अपने लिये भी किया जाये
सर्दी गर्मी बरसात को पास से देखा जाये
हर मौसम को दिल से महसूस किया जाये
मृत अनुभूतियों और संवेदनाओं को
एक बार फिर से जीवित किया जाये
शरीर की इस चलती फिरती मशीन में
एकबार फिर से जीवन रस भर दिया जाये

(38)

बहुत हैं

बहाने को यहाँ
आँसू बहुत हैं
और छुपाने को यहाँ
आहें बहुत हैं
पाने को जहाँ
मंज़िलें बहुत हैं
भूलने को वहाँ
राहें बहुत हैं
मान लो अपना
तो अपने भी बहुत हैं
और अपनों में ही
अनजाने बहुत हैं
दिल दिखाता रंग
दुनिया में निराले
हैं अगर ख़ुशियाँ
तो वीराने बहुत हैं
प्यार भी देते हैं कुछ
हम मानते हैं
पर जो नफ़रत बाँटते वो भी बहुत हैं
ज़िन्दगी देना नहीं
बस में किसी के
ज़िन्दगी ले लें
वो दीवाने बहुत हैं

(39)

दिल की हालत

दिल की हालत किसी को दिखानी नहीं
दिल की बातें किसी को बतानी नहीं
देख कर हँस दे कोई गवारा नहीं
सुन के मुस्का दे कोई गवारा नहीं
ये पता है कि कोई हमारा नहीं
हम को अब तक किसी ने पुकारा नहीं
जो मुकद्दर में हो वो सितारा नहीं
हमको बहलाये ऐसा नज़ारा नहीं
मौसमों ने कभी भी निख़ारा नहीं
कोई पल हँस के हमने गुज़ारा नहीं
ज़ख्म रखने हैं परतों के भीतर हमें
दिल की हालत किसी को जतानी नहीं
हम को पढ़ लें कहीं ऐसी आँखें नहीं
कोई लिख ले मेरी वो कहानी नहीं
दिल की हालत किसी को दिखानी नहीं
दिल की बातें किसी को बतानी नहीं

(५०)

संगदिल

संगमरमर की तरह संगदिल न बन जाओ
दिल के अहसास ख़त्म हो जायें
इस क़दर तंगदिल न बन जाओ
संगमरमर सी तेरी सूरत में
मैंने भगवान देखना चाहा
अपने दिल में बनाई मूरत में
सच्चा इन्सान देखना चाहा
मेरे विश्वास को इस तरह झूठा न करो
ख़ुद के ज़मीर से इस तरह रूठा न करो
ख़ुद को पहचान लो अभी है वक़्त
जो ख़ुद को न जान सका
वही है सबसे बड़ा अशक्त
तुम पत्थर बन कर
शीशे के महल में क्यों रहते हो
ख़ुद की बनाई
शीश महल की क़ैद को क्यों सहते हो
यह सज़ा किसे देते हो
ख़ुद को या मुझको
तुम चाहे कोई सज़ा दो
हम पूजते रहेंगे तुमको
हमारे सब्र को न आज़माओ
हमें तो पत्थरों से भी निभाना आता है
निभा लेंगे तुमसे भी
पर तुम ख़ुद को माफ न कर पाओ
इतने बेदिल न बन जाओ
संगमरमर की तरह संगदिल न बन जाओ

(41)

पलकों के दरवाज़े

जब कभी
तुम्हारी यादों के साये आकर
मेरी आँखों में लहराने लगते हैं
मेरी निगाहों से झाँकने लगते हैं
मेरे दिल और दिमाग़
सब कुछ भूलकर
मेरी आँखों में सिमट आते हैं
सारे ख़यालात
सारे अहसासात
सिर्फ़ आँखों से लिपट जाते हैं
तुम मेरी आँखों से झाँक कर
मेरे दिल के राज़ खोलते हो
अपनी चुप्पी में भी
बहुत कुछ बोलते हो
मेरी आँखों की नमी
टपकते आँसू
झुकी पलकें
ख़ामोश निगाहें
या आँखों का ख़ालीपन
सबमें सिर्फ़ तुम होते हो
तुम्हारी यादों के साये
तस्वीर बन कर
मेरी आँखों में बस जाते हैं
मेरी पलकों के दरवाज़े
तुम्हें छुपा लेने को
ज़ोर से कस जाते हैं

(42)

अप्रत्यक्ष डोरियाँ

क्यों कुछ रिश्ते
सिर्फ़ घाव देने के लिये ही बनते हैं
यह कैसी त्रासदी है
जिन्हें कुछ नहीं होना चाहिए
वे सब कुछ बने रहते हैं
न चाहते हुए भी
इन रिश्तों का बोझ हम सहते हैं
रिश्तों की लाशों को
जीवन भर ढोते हैं
ऊपर से हँस-हँस कर अन्दर से रोते हैं
जी करता है
रिश्तों के फंदों से निकल कर
कहीं भाग जायें
पर ये अप्रत्यक्ष डोरियाँ
बहुत मज़बूत होती हैं
ये घाव किसी कैंची से काट कर
फेंके नहीं जा सकते
ये जीवन भर रिस-रिसकर
अपनी उपस्थिति का
आभास कराते रहते हैं
इन अनचाहे रिश्तों के घाव मिलते रहें
ये रिश्ते सदा चलते रहें
इसके लिये हम ख़ुद को
हर परीक्षा के लिये तैयार रखते हैं
ये अप्रत्यक्ष डोरियाँ कहीं टूट न जायें
इस अहसास से भी सिहरते हैं

(43)

सुधियों के दर्पण में

जब भी मेरी सुधियों के दर्पण में
आकर तुम झाँकते हो
मेरे जीवन के शून्य गगन में
अनगिन मोती टाँकते हो
विद्युत सी कौंधती
यादें तुम्हारी
ज्योतित हो जाती हैं
मेरे घर आँगन में
एक-एक मोती में
चित्र बन चमकते हो
भर जाते स्वप्न मेरे
रीते नयनन में
देते प्रकाश मेरी
अँधियारी राहों को
फूल बन महकते हो
मेरे मन उपवन में
मुरली की धुन से
कानों में रहते हो
भरते संगीत मेरे
मन वृन्दावन में
नेह भरे कथा गीत
मेरे अन्तर में
तुम ही तो बाँचते हो
जब भी मेरी सुधियों के दर्पण में
आ कर तुम झाँकते हो

(५५)

ख़ुशी तो छुपी बैठी थी

कभी-कभी मानव
कितना लाचार हो जाता है
किसी अपने को ढूँढने के लिए
पूरा संसार घूम आता है
मैंने भी तुम्हें कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढा
घर बाहर नगर-नगर
नदियाँ समन्दर पर्वत कन्दर
शहर-शहर गाँव-गाँव
छोड़ी नहीं कोई ठाँव
वन उपवन नन्दन कानन
मुनियों के आश्रम मनभावन
मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारा
ढूँढती फिरी जग सारा
हार कर बैठ गई बस कुछ भूलकर
बस तुम्हारी याद के स्वप्नों में झूलकर
मैंने पुकारा तुम्हें बड़े दिल से
लगा जैसे पहुँच गई मैं मंज़िल पे
अचानक अन्तर में हुआ स्फुरण, नया ज्ञान जागा
भर गया उजाला, अँधेरा दूर भागा
हाँ, मेरी ख़ुशी
तुम तो मेरे अन्तर में ही छुपी बैठी थीं
आज मैंने तुम्हें पा लिया तुम दूर नहीं थीं
जिसे पाने के लिये मैं भटकती रही
नगर-नगर डगर-डगर
वह ख़ुशी तो छुपी बैठी थी
मेरे पास, मेरे ही अन्दर

(45)

ये रिश्ते

रिश्तों के तार
एक अनदेखी डोरी से
हमेशा जुड़े रहते हैं
बचपन से लेकर
ज़िन्दगी के आख़िरी पड़ाव तक का
कोई रिश्ता
न जाने कब और कैसे
यादों के झरोखों में
झाँकने आ जाता है
सपनों में तिर आता है
कभी-कभी सरापा
सामने आ जाता है
क्यों कभी-कभी
दुनिया इतनी छोटी हो जाती है
चाहे-अनचाहे, अपने-पराये
दूर-पार के कितने ही नाम
कितने ही चेहरे
यादों के आसमान में, सितारों की तरह
जब तब टिमटिमा जाते हैं
हम भी जाने-अनजाने
उनको बुलाते हैं
और हौले से सहलाते हैं
अनदेखी डोरियों में झूलते ये रिश्ते
हमारी हर सोच में
कहीं न कहीं शामिल रहते हैं
कभी हँसाकर, कभी रूलाकर
अपने होने का अहसास कराते रहते हैं

(46)

पगली पायलिया

दूर कहीं जंगल में
मंगल सा छा गया
मचलती हवाओं ने
चूम लिया जा कर
बाँसों के झाड़ को
पोर-पोर बाँस की
बन गई मुरलिया
चुरा कर ले गईं
हवायें संगीत को
घुल गये मधुर गीत
हवाओं की तरंगों में
फुसफुसा गई हवा
कानों में कुछ आकर
भर गया तन मन
नेह की उमंगों में
मुस्कुरा उठी प्रीत
आमों की डालों पर
डोल रही पगलाई
कुहू-कुहू सफ़र भर लाई
काली कोयलिया
छा गया ऋतुराज का
साम्राज्य धरा पर
झनक-झनक बाज रही
पगली पायलिया

(47)

श्वेत श्याम

चूमें जब हवायें आ-आकर
मेरे उलझे बालों को
पल भर को बिसरा देती हूँ
मैं उन गुज़रे सालों को
उड़ा ले गये साथ में अपने
मेरे बालों का जो रंग
बना गये मेरे जीवन को
कितना भूरा और बेरंग
कहते हैं काले पर चढ़ता
नया कभी न कोई रंग
श्याम-श्वेत हो जाता कैसे
यह कैसा कुदरत का ढंग
भूल रहे हैं मेरे अपने
इन बालों के साथ मुझे
खुद का रंग बदल लेना है
इन बालों के साथ मुझे
मेरे अपने भूले जब
मुझको हवाओं ने ढूँढ लिया
श्वेत श्याम में फर्क न रखा
उलझी लट को चूम लिया

(48)

मित्रता निभाओ

मित्र!
जब तुम मिले तो लगा
जीवन में कोई अपना
कोई दुनिया से अलग-सा मिला
मैंने अपना सम्पूर्ण अस्तित्व
सम्पूर्ण विश्वास
अपनी मित्रता के नाम कर दिया
मैंने तुम्हें
अपने नाम के साथ मिला लिया
पर क्यों तुम
हवा के झोंकों की तरह
इधर-उधर मुड़ जाते हो
क्यों अनिश्चितता से बार-बार
कहीं और जुड़ जाते हो
मित्र हो तो मित्रता निभाओ
सारी दुनिया की तरह
बेगाने बनकर
मेरे विश्वास को न ठुकराओ

(५१)

पीछे छोड़ने का दुख

ज़िन्दगी
ज़िन्दगी की लम्बी-लम्बी राहों पर
चलती चली जा रही है
तय कर डाले बड़े-बड़े सफ़र
ऊबड़-खाबड़ रास्ते
चाहे यह नहीं जानती कि
कर रही यह सब क्यों
और किसके वास्ते
फिर भी न जाने क्यों
सफ़र चल रहा है
ज़िन्दगी आगे बढ़ती जा रही है
हर अगले क़दम के साथ
लगता है
पीछे कुछ छूट गया है
हर दोराहे चौराहे पर
क्षण भर को पाँव थम जाते हैं
हर मोड़ पर
पीछे की ओर देखकर
नयन नम हो जाते हैं
लगता है पिछली राहों पर छूटी ज़िन्दगी
हज़ार आँखों से मेरा पीछा करती रहती है
ज़िन्दगी पीछे छोड़ने का दुख
शायद हर ज़िन्दगी सहती है

(50)

धीमी-सी मुस्कुराहट

कभी-कभी दिल में जागती उम्मीदें
होठों तक आ जाती हैं मुस्कुराहट बनकर
कभी अन्तर में गूँजती आवाज़ें
बाहर आ जाती हैं गुनगुनाहट बनकर
डरता रहता है दिल हरपल
कहीं खुल जायें न मन की परतें
कभी दिल की यह कशमकश
चेहरे पर आ जाती है घबराहट बनकर
बहुत से तूफान
जो उठते रहते हैं दिल और दिमाग़ में
हिला देते हैं पूरा बदन
एक सिहरन एक थरथराहट बनकर
कभी भूल जाती हूँ पल भर को
दुनिया के सारे रंजोग़म
जागती है जब पलभर को
उम्मीद की एक किरण
होठों पर धीमी-सी
मुस्कुराहट बनकर

(51)

प्रीत की रीत

बन्धु! नहीं पहचानी तुमने
मेरे भोले मन की प्रीत
रूठे तुम तो रूठा मुझसे
मेरे जीवन का संगीत
सदा सदा हो आते रहते
क्यों तुम मेरे सपनों में
पर तुमने तो कभी न समझा
हमको अपने अपनों में
मेरे जीवन की परिभाषा
केवल नाम तुम्हारा है
टूटी नहीं अभी तक आशा
झूठा एक सहारा है
मेरी झूठी आशा को तुम
एक बार सच कर जाओ
कुछ आकर अपनी कह जाओ
कुछ मेरी भी सुन जाओ
क्या मुझको ठुकराना ही है
एक तुम्हारे मन की जीत
यह तो न्याय नहीं है बन्धु
यह तो नहीं प्रीत की रीत

(52)

आम आदमी का हिस्सा

आज हमारे देश का क्या हाल हो रहा है
हर आदमी तनाव से बेहाल हो रहा है
सब निन्यान्वे के फेर के करीब हैं
कोई बहुत अमीर, कोई बहुत ग़रीब हैं
मध्यम वर्ग तो वैसे ही बीच में जीता है
उम्रभर तो पाटों के बीच में पिसता है
नेता लोग जनता के सिर पर पैर रखकर
चढ़ जाते हैं सत्ता की ऊँची सीढ़ी पर
आमआदमी नीचे खड़े रह जाते हैं
नेता जी बना लेते हैं कुर्सी पर पकड़
फिर शुरू हो जाता है कुर्सी का क़िस्सा
भूल जाते हैं नेता जी आमआदमी का हिस्सा
इसी धर-पकड़ में बीत जाते हैं पाँच साल
देश वहीं का वहीं रह जाता है बदहाल
राम राज्य के वादे धरे रह जाते हैं
स्वार्थ के आगे परमार्थ परे रह जाते हैं
काश कोई इनकी आत्माओं को जगाये
काश कोई सच ईमान देश प्रेम की ज्योति जलाये
काश कोई भ्रष्टाचार आकर मिटा दे
काश कोई सदाचार आकर सिखा दे

(53)

यह प्रश्न है तुम्हारे लिये

कवि! मुझे बताओ जीवन क्या है?
कोई मौत के डर से मरता रहता है
कोई ज़िन्दगी जीने से डरता रहता है
जीने के डर से पल-पल जी-जीकर मरता है
कवि यह प्रश्न है तुम्हारे लिये
इस जीवन के कितने पल तुमने ख़ुद के लिये जिये
दर्द घुटन कुण्ठा आक्रोश क्या जीने के ये ही सहारे हैं
ज़िन्दगी और मौत दोनों तुम्हारे हैं
दोनों का स्वागत तुम्हें ही करना है
लेकिन जीने के बाद ही तो मौत का वरण करना है
समय से पूर्व मौत को बुलाकर
क्यों ज़िन्दगी का अपमान करते हो
ज़िन्दगी जी भर कर जियो
क्यों मौत से पहले मरते हो
अगर तुम आस्तिक हो
तो भगवान के दिये इस अप्रतिम उपहार का पूर्ण सम्मान करो
अगर नास्तिक हो तो उसे दिखा दो अपनी हिम्मत और इच्छाशक्ति
इनके बल पर सिर उठाकर जीने का सामान करो
जब मौत का एक दिन निश्चित है
तो नींद रातभर क्यों न आये
जब एक पूरी मौत मरना ही है
तो किश्तों में ख़ुदकुशी क्यों की जाये
क्यों न अपनी सोच को बदला जाये
क्यों न दुख के अँधेरों में से
सुख की एक किरण ढूँढने का प्रयास करें
क्यों न किसी राधिका की नेहभरी यादों से
अपने अन्तःकरण में उजास भरें

(54)

मेरी हँसी ही

माँ के घर बहुत कुछ छोड़ आई
जीवन को एक नई राह पर मोड़ लाई
माँ, बाबू, भाई, बहन, गुड़ियाँ, खिलौने
चिड़ियाँ, गिलहरी, प्यारे मृगछौने
भूल गई सबको अब तो यहीं रहना है
जो मिला खाया है, जो मिला पहना है
पर एक चीज़ माँ के घर छूट नहीं पाई
जिसके कारण जीवन में, मैं कभी न मुरझाई
उससे ही मुझको प्यार से सजना है
मेरी हँसी ही मेरा गहना है
जिस दिन ये हँसी मुझसे दूर हो जायेगी
जीवन की सब आशायें चूर हो जायेंगी
यही हँसी मुझको सबसे जोड़ती है
जीवन को दुख से सुख की ओर मोड़ती है
माँ ने कहा था बेटी सबको सुख देना
आँसू सबके लेकर हँसी उनको देना
ध्यान रहे आँसू किसी को न दिखाना
आँसू पीकर भी सदा मुस्कुराना
माँ की इसी सीख के साथ मुझे रहना है
धन दौलत हीरे मोती का मोह नहीं करना है
मेरी हँसी ही मेरा गहना है

(55)

लपटें और रेशमी सपने

मेरी ज़िन्दगी लपटों से घिरी है
सपने मैं रेशम के बुनती हूँ
यह कैसी विडम्बना है
मैं फूल और काँटे दोनों
साथ-साथ चुनती हूँ
मेरे जीवन में
ताण्डव और लास्य
दोनों एक साथ थिरकते हैं
रूदन और हास्य
दोनों एक साथ महकते हैं
कभी आँखें हँसती हैं
आँसू अन्दर जाकर सिसकते हैं
कभी वर्षों से सहेजकर रखे गये अरमान
पलभर में बिखरते हैं
मेरे रेशमी सपने
लपटों से बचने के प्रयत्न में
और उलझते जाते हैं
मेरे जीवन के चक्र
अपनी धुरी से फिसलते जाते हैं
फिर भी रोज़ रात को मैं
लपटों के बीच में से
सुख स्वप्नों की पुकार सुनती हूँ
मेरी ज़िन्दगी लपटों से घिरी है
सपने मैं रेशम के बुनती हूँ

(56)

अम्मा का नन्दलाला

मेरे बापू का गोपाला
मेरी अम्मा का नन्दलाला
नटखट कान्हा सूरदास का
मीरा का गिरधर गोपाला
बन जाता है रथवान कभी
फिर बने कभी गीतावाला
जिसके मन जैसे भाव रहें
वैसा बन जाये गोपाला
राधा का कृष्ण कन्हैया है
है ग्वालों का माखनवाला
बन गया कंस का काल कभी
कभी नाच नचाये बृजबाला
कभी तन्दुल गाये सुदामा के
कभी खाये विदुर जी का केला
उसके ही एक इशारे पर
चलता है दुनिया का मेला
जग को नचाये अपनी धुन पर
यह मन मोहन मुरली वाला
मेरे बापू का गोपाला
मेरी अम्मा का नन्दलाला

(57)

आँखों का मरहम

अन्दर के ज़ख़्म
जब सोचना शुरू कर देते हैं
तो उनसे टप-टप टपकता ख़ून
आँखों की राह
बहना शुरू कर देता है
ये क़तरा-क़तरा टपकता ख़ून ही
ज़ख़्मों पर मरहम का काम करता है
कुछ देर के लिये
ढाँप लेती हैं पलकें
अन्दर के उन ज़ख़्मों को
जो दिल की सोच को
बेनक़ाब करने को
बेताब हो रहे हैं
धीरे-धीरे आँखों का मरहम
कुछ देर के लिये सही
ज़ख़्मों की इस सोच को
सुकून देकर सुला देता है
फिर ये खाली-खाली आँखें
खाली-खाली नज़रों से
न जाने क्या सोचने लगती हैं

(58)

एक उम्मीद

क्यों कुरेदते हो जब-तब
मेरे दिल के अन्दर
बंद दरवाज़ों पर पड़े तालों को
नुकीली तीलियों से
अगर कभी बड़ी चोट खाकर
टूट भी गये
तो भी तुम्हें क्या मिलेगा
मेरे बीते बरसों के
कुछ आधे-अधूरे अँधेरे दिन
कुछ नाकाम हसरतें
कुछ झूठे टूटे सपनों के टुकड़े
कुछ दूर पार के लोगों की
छुपी घुटी यादें
कुछ अपनों के गिले-शिक़वे
कुछ तीर से ताने
जो चुभ रहे हैं बरसों से
दिल के अँधेरे बंद कमरे में
दिल की कमज़ोर दीवारों पर
टकराते हैं और निकालते हैं
ख़ून के चंद क़तरे
जो चला रहे हैं
मेरे दिल की मशीन को
यही चंद क़तरे मुझे ज़िन्दगी देकर
जगाते हैं एक उम्मीद
शायद कभी कोई सूरज आये
और बरसों के इन अँधेरों को मिटाये

(59)

सागर तीरे

फूल खिले कुछ चट्टानों पर सागर तीरे
करें बैठ कर कनबतियाँ कुछ धीरे-धीरे
डाले गलबहियाँ गुन-गुनकर विहँस रहे हैं
सुनकर उनकी बतकहियाँ कण महक रहे हैं
लहर-लहर फूलों की बातें सुनने आती
तट तक आकर उनको छू कर वापिस जाती
फूलों ने बातों में कुछ कर डाले वादे
लहरें आईं दौड़-दौड़ कर मोहर लगाने
सागर ने अपनी गागर से रत्न निकाले
लहरों ने भी उछल-उछल फूलों पर वारे
फूलों ने हँस-हँस लहरों को गले लगाया
लहरों को अपने दिल का सब राज़ सुनाया
सागर ने बरसाईं दुआएं बनकर बादल बरसा
ढोल बजा चमकाकर बिजली ज़ोर-ज़ोर से हरषा
रखकर सागर की बूँदों को सर आँखों पर
फूल चले उड़ने नव जीवन की पाँखों पर

(60)

बाँट दे उजाले

सबको पता है
हर रात की
सुबह ज़रूर होती है
फिर भी क्यों रात
रातभर ओस बन के रोती है
पौ फटने से पहले
अँधेरा घना होता है
पर कुछ ही पलों में
उन उजालों का सामना होता है
जिन्हें निगल लिया था अँधेरों ने
एक बार फिर उन्हें रौशनी मिल जाती है
किरण-किरण विहँस-विहँस
फूल-सी खिल जाती है
मरूभूमि में भी मरूद्यान होता है
चलता रहता है विधि का चक्र
कभी सीधा कभी वक्र
ज़िन्दगी जो बोती है
वही है काटती,
फिर क्यों ज़िन्दगी खुद को
पीड़ा है बाँटती
क्यों न किरण बनकर
बाँट दे उजाले
शाँतिदूत बनकर
सबको गले से लगा ले

(61)

काश होता कोई

काश होता कोई ऐसा हमसफ़र
जो जीवन की असम राहों में
जीवन के विषम मोड़ों पर
साथ देता उम्रभर
जो फूलों से भर देता मेरी राहों को
जो ग़ज़ल में बदल देता मेरी आहों को
जो जीवन में आ जाता मीत बनकर
जो साँसों में घुल जाता गीत बनकर
जो बन जाता मेरा रक्षक बन्धु मित्र
जिसके साथ रचती मैं जीवन के
रूपहले सुजहले सतरंगे चित्र
जिस एक के साथ मैं शून्य से अंक बन जाती
जीवन को जीने की नई दिशा मिल जाती
उलझ कर रह गई सपने बुनकर
काश मिल जाता कोई ऐसा हमसफ़र

(62)

प्यारी-सी यादें

क्यों कभी-कभी
सुनहरी प्यारी-सी यादें
दिल में
एक उदास दर्द की
लहरें भर जाती हैं
क्यों अचानक
कुछ भूले बिसरे
पुराने प्यार भरे चेहरे
दिल और दिमाग़ के झरोखों में
आ-आ कर झाँकने लगते हैं
और एक बार फिर दिल में
एक उदास दर्द की लहरें भर जाते हैं
अतीत के कितने आनन्ददाई पल
कितने सारे अपने
आ जाते हैं सदलबल
कुछ देर को गुदगुदा जाते हैं
दिल के हर कोने को
जाते-जाते छोड़ जाते हैं
यादों के कुछ पल रोने को
एक बार फिर दिल में
उदासियों के सागर
लहरा जाते हैं

(63)

रिश्तों की चादर ओढ़कर

कह दिया तुमने बड़ी आसानी से
भूल जाओ रिश्तों को
क्या रखा है रिश्तों में
बहुत बड़ी बात कह दी तुमने
बदल कर रीत दुनिया की
नाम लिखवा लिया फरिश्तों में
दोस्त!
क्यों रिश्ते तोड़ना इतना सहज होता है
क्या कभी नाख़ूनों से माँस अलग होता है
रिश्ते तो कुदरत का कीमती तोहफा हैं
हर रिश्ते पर एक अपने का
नाम खुदा होता है
रिश्तों की चादर ओढ़कर ही
तय होते हैं सफ़र ज़िन्दगी के
रिश्तों की ताक़त के बल पर ही
सह लेते हैं हम कहर ज़िन्दगी के
रिश्ते तोड़ना बड़ा आसान है
पर जोड़ना बड़ा मुश्किल है
प्यार से थाम लो
रिश्तों की मज़बूत डोरियाँ
मिटा दो दिल से
दिलों की दूरियाँ

(64)

इक पगला-सा प्यार

मेरा पागल मन कर बैठा इक पगला-सा प्यार
पंचम् सप्तम् सभी सफ़रों में बजे हृदय के तार
किन्तु प्यार था मेरा झूठा पल में मुझसे रूठा
लौट के फिर न आया बैरी कितना रही पुकार
झूठे से दिल लगा लिया सब कहें मुझे दीवानी
दीवाना मन फिर भी उससे रो-रो करे गुहार
जिसने प्रीत करी हो वो ही मेरा दुखड़ा जाने
बिछड़ा जिसका मीत वही समझे यह तीखा वार
उसके बिन सूना मेरा मन, सूना घर-संसार
वह आये तो सार जगत में वरना सब निस्सार
दिन नहिं चैन रैन नहिं निंदिया पल-पल राह निहारूँ
आठों पहर लटकती सिर पर दोधारी तलवार

65

कुछ हमारी सुनिये

अपनी ही कहता रहे, और को न दे कान
भैया! ऐसे मित्र से, बचा के रखो प्राण
बचा के रखो प्राण, बड़े पर बोल न बोलो
अपनी कहो, सुनो औरों की, रस बातों में घोलो

बात जलेबी-सी कहे, मीठे रस में घोल
समझो गड़बड़ है कहीं, रहो कान को खोल
रहो कान को खोल, दिमाग़ भी खोल के रखना
अधिक मधुर कड़वा बने, यह तोल के रखना

संयम रखे नहीं जीभ पर, बोले जो मन में आवे
भैया! ऐसा मानुष शायद, नहीं किसी के मन भावे
नहीं किसी के मन भावे, दिल रहे दुखाता
इसी जीभ से मानव, शत्रु मित्र बनाता

वादे नित करता रहे, पूरा करे न कोय
भैया! ऐसे मित्र से, दुश्मन अच्छा होय
दुश्मन अच्छा होय, करे न झूठे वादे
बीच भँवर में डुबो दें, झूठे मित्र के वादे

(66)

आघात मेरे

उलझे-उलझे इस जीवन में
उलझ गए दिन-रात मेरे
क्या भूलूँ, क्या सोचूँ मन में
उलझन में जज़्बात मेरे
बहुत लोग आए जीवन में
आए भी और चले गए
दिया प्यार विश्वास जिन्हें
उनके ही हाथों छले गए
देकर गहरे ज़ख्म गए वो
आए थे जो दवा देने
घर में आग लगा कर आए
थोड़ी और हवा देने
कौन सुनेगा किसे दिखाऊँ
कितने हैं आघात मेरे
उलझे-उल्झे इस जीवन में
उलझ गए दिन-रात मेरे

(67)

न तुम हार जाना

न मैं हार जाऊँ, न तुम हार जाना
यूँ चलता रहे, ज़िन्दगी का फ़साना
गुज़र जायेंगे, वक़्त के काले साये
यही वक़्त है, काम मरहम का करता
नहीं वक़्त ऐसा, हमेशा रहेगा
यही वाक्य मानव को, धीरज है देता
कोई समझे इसको है, जीने की आदत
कोई ख़ुशफ़हमी कहता, या कहता बहाना
मगर जीते जाना है, इन्सां की ताकत
वही है सफल, जो बदल दे ज़माना
गया वक़्त, कुछ सीख दे जाता हमको
न भूलेंगे, उसने हमें जो सिखाया
मगर हम भुला देंगे, वो काली यादें
जिन्हें दे गया, वक़्त का काला साया
चलें साथ मिलकर, करें सामना हम
हमें वक़्त से है, नहीं हार जाना
रहे याद कुछ, और पड़े कुछ भुलाना
यूँ चलता रहे, ज़िन्दगी का फ़साना

(68)

कैसे बन जाते हैं नाते

जहाँ जाती नज़र
तुम ही नज़र आते
कोई मुझको बतलाये
कैसे बन जाते हैं नाते
बिन तेरे दिन-रात
नहीं लगते अपने
नींद अगर आ जाये
तो भी आते तेरे सपने
हज़ारों में हैं अकेले
हम बिना तेरे
हर तरफ घेरे हैं
तेरी यादों के घेरे
बढ़ रहे हैं हर तरफ
काले अँधेरे
सूर्य तेरे नाम का बस
चमक जाये
भाग्य के नीले गगन पर
आओ तुम
एक बार आओ
बीत जाये रात
आ जायें सवेरे
आते तुम
सुनते तुम्हारी
और कुछ अपनी सुनाते
कोई तो मुझको बताये
कैसे बन जाते हैं नाते

(69)

गोरी चाँदनी साँवला सागर

कभी-कभी जब दिल बहुत उदास होता है
जा कर बैठ जाती हूँ सागर के किनारे
सागर भी आ जाता है लहरों के रथ पर सवार
मुझे छू-छू कर करता है इशारे
धीरे-धीरे आकर चाँद घुलने लगता है उसके पानी में
सारी चाँदनी घुल-घुल कर
नहाने लगती है उसके साँवले पानी में
कभी-कभी मुझे लगता है
मेरे मन की उदास काली परछाईयाँ ही
सागर को उदास कर देती हैं
और मेरा हितैषी सँवला जाता है
मैं एक झटके से उठकर
अपने प्यारे सागर से दूर जाकर बैठ जाती हूँ
और आँख मिचौली खेलते तारों को
पानी के अन्दर कूदती उछलती
झिलमिलाती शीतल चाँदनी को
लहरों के हिंडोले पर, झूला झूलते नृत्य करते
थिरक-थिरककर नहाते देखती रहती हूँ
फिर खुद से पूछती हूँ
यह कौन किसको शीतल कर रहा है?
चाँदनी सागर को या सागर चाँदनी को
राधा सी गोरी चाँदनी
कान्हा सा साँवला सागर
मिलकर एकाकार हो रहे हैं
और मैं उन्हें देखकर
भाव विभोर हो रही हूँ

(70)

कविता क्या है

उन्होंने कवि से पूछा, कविता क्या है
कवि ने पलकों को धीरे से उठाया
प्रश्न को सुनकर धीमें से मुस्कुराया
फिर हौले से बोला-
शरीर के अन्दर रहने वाली आत्मा है कविता
आत्मा को परमात्मा से मिलाती है कविता
कविता मूक की आवाज़ है
कविता अन्तर के तारों का साज़ है
कविता शक्तिवान की शक्ति, भक्त की भक्ति है
कविता अँधे की आँखें, अपंग की पाँखें हैं
कविता प्रेमी की अभिव्यक्ति विरही की हूक है
कविता अनहद का नाद कोयल की कूक है
आकाश की ऊँचाई सागर की गहराई
प्रकृति की मुस्कुराहट
हृदय में संचित कामनाओं, भावनाओं
अनुभूतियों और अहसासों की आहट
कल्पनाओं की साकार मूरत है
प्रेम और विरह, सुख और दुख
आशा और निराशा की शब्दों से चित्रित सूरत है
कविता संगीत की सहेली है
सचमुच कविता तो एक पहेली है

(71)

ये लम्हे क्यों

हम तो हर लम्हे को
सहेजकर रखना चाहते हैं
हर लम्हे से सुख की
स्नेह की सौगात चाहते हैं
फिर ये लम्हे क्यों
हमें छोड़कर चले जाते हैं
लाख पुकारते रहो
मुँह मोड़कर चले जाते हैं
हम तो लम्हा-लम्हा
हर लम्हे को समेटकर
पास रखने की कोशिश में रहते हैं
और वे चुपके से खिसक जाते हैं
अनायास हाथों से फिसल जाते हैं
जाने से पहले कुछ भी नहीं कहते
चले जाते हैं
फिर लौटकर भी नहीं आते
काश!
कोई इन लम्हों को
रोककर पूछ पाता
ये जाकर
वापिस क्यों नहीं आते?

(72)

आँसुओं की भाषा

ये आँसुओं की भाषा भी बड़ी अजीब है
पता नहीं कब ये दूर, कब करीब है
रहते हैं अन्दर, बहते हैं बाहर
बहते हैं बाहर, सहते हैं अन्दर
दुख में भी आते हैं
सुख में भी आते हैं
तरह-तरह के रंग
चेहरे पर दिखाते हैं
आँसू बनावटी भी होते हैं
दिखावटी भी होते हैं
कभी दुख को कम करते हैं
कभी बढ़ाते हैं
कभी हृदय को शान्ति देते हैं
कभी टपककर चिढ़ाते हैं
सूख जाते हैं बह-बहकर
सूख जाते हैं सह-सहकर
साथ ही सिखा जाते हैं
हर दुख को सहना
हर हालात से लड़ना
किस्मत की किताब के
हर पन्ने को पढ़ना

73

बहे जा रहे हैं रिश्ते

वक़्त की बहती नदी में
बहे जा रहे हैं रिश्ते
क्या इससे बुरा वक़्त भी आयेगा
कौन पूछे किससे
अभी तो बचे हुए हैं ख़ून के रिश्ते
कहीं ये भी तो नहीं टूट जायेंगे
कहीं वक़्त के विष चक्र
इन्हें भी तो नहीं लूट जायेंगे
कसकर पकड़ लो वक़्त की डोरियों को
खींचकर लगाम कर दो कम दूरियों को
बना लो पक्के बाँध रिश्तों के बीच
नहीं तो वक़्त की नदी की तेज़ धार
इनको देगी इतना खींच
कि चाहकर भी हम
इन रिश्तों को बचा न पायेंगे
हम देखते रहेंगे
और प्यारे रिश्ते
हाथ से फिसल जायेंगे

(74)

एक छेद भी नहीं

ज़िन्दगी में मैंने
बहुत से रास्ते बदले
लेकिन क्यों
सारे रास्ते जाकर
ख़त्म हो जाते हैं
उस अंधी गली की
उस अंधी बंद दीवार पर
जिसमें न कोई खिड़की
न कोई दरवाज़ा
न ज़मीन का अहसास
न आसमान की आस
मेरी आँखों का शून्य
निहारता रह जाता है
उस शून्य को
जो हर राह से आकर
मेरा रास्ता रोक लेता है
जिसमें रौशनी की किरण आने के लिये
एक छेद भी नहीं है

75

कैसी विडम्बना रही

जीवन के सुख दुख की
समानान्तर पटरियों पर चलते-चलते
हम ख़ुद से कितनी दूर हो गये
समानान्तर पटरियों को मिलाने की कोशिश में
जीवन की रेल कब
पहुँच गई उस आख़िरी मंज़िल पर
जहाँ पहुँचकर
अतीत वर्तमान और भविष्य
कितने अर्थहीन हो गये
पता ही न चला
कब क्यों और कैसे
सबको खुश करने के
सबको अपना बनाने के
असफल प्रयत्न करते-करते
हम ख़ुद से कितनी दूर
ख़ुद के लिये कितने महत्वहीन हो गये
शायद अस्तित्वहीन हो गये
आज मन एक शिकायत करता है ख़ुद से
जब तुम अपने ही न हो सके
तो दूसरों के कैसे हो पाते
जीवन की ये कैसी विडम्बना रही
न हम दूसरों को अपना बना पाये
न ख़ुद के ही हो पाये

(76)

जीने के किस्से

जीने के भी कैसे किस्से हैं
जीने के लिये
न जाने क्या-क्या करते हैं
ज़िन्दगी का एक दिन बढ़ाने के भ्रम में
एक दिन में सौ-सौ बार मरते हैं
ज़िन्दगी में पाने को बहुत कुछ होता है
पर खोने को उससे भी अधिक होता है
जो इस असन्तुलित सन्तुलन को समझ नहीं पाता
वह ज़िन्दगी भर रोता है
कब क्या करना है कब क्या नहीं करना
किस बात के लिये सौ बरस है जीना
किस बात पर पलभर में मर जाना
हर बात का अपना तरीका है
हर आदमी का ज़िन्दगी को समझने का
ज़िन्दगी को जीने का अपना सलीका है
हर इन्सान की ज़िन्दगी में
हर अलग-अलग पल को जीने के लिये
अलग-अलग हिस्से हैं
जीने के भी कैसे-कैसे किस्से हैं

(17)

कालिदास के मेघदूत

जब घिर आते काले बादल
मन क्यों हो जाता है पागल
लगता जैसे कालिदास के
मेघदूत बनकर आये हैं
बिछड़े परदेसी का कोई
मूक संदेशा ले आये हैं
छनक उठे क्यों मेरी पायल
मेरी अँखियाँ उनको ताकें
पर वे तो कुछ भी न बोलें
तब उनकी बूँदें लगती हैं
मुझको जैसे आग के शोले
मन क्यों हो जाता है घायल
प्रियतम लौट न आये जिसके
वह बिरहिन कैसे सुख पाये
पूछे बार-बार बदरा रे!
कोई खबरिया पी की लाये?
तुम तो देश विदेश घूमते
लेकर आओ मेरे साजन
मन क्यों हो जाता है पागल
जब घिर आते काले बादल

78

ओ! काले मतवाले बादल

ओ! काले मतवाले बादल
मेरे घर क्यों शोर मचाये
जा मैं तुझसे नहीं बोलती
पी की खबरिया तुम न लाये
जल भरकर जाते हो चहुँ दिशि
सारा जगत घूमकर आए
फिर भी तुम कैस निरमोही
कोई संदेश न पी का लाये
नाम पूछते हो तुम पी का
भैया! कैसे तुम्हें बताऊँ
दिल में रहे मुख में न आये
मैं तो लेते हुए लजाऊँ
फिर भी जो हो सबसे सुन्दर
और हो सारे जग से न्यारा
वही श्यामसुन्दर है मेरा
जिसने मेरे स्वप्न सजाये
तुम तो मेरे बन्धु सखा हो
क्यों अब तक पहचान न पाये
ओ! काले मतवाले बादल
मेरे घर क्यों शोर मचाये

79

विश्वास की बुनियाद पर

विश्वास की बुनियाद पर
कुछ रिश्ते बनाए थे
काँच की दीवारों पर
कुछ घरौंदे सजाए थे
कभी आँगन की धूप में
कभी बाग के पेड़ों तले
कसमों वायदों की बरसात में
भीगकर गले-गले
गवाह बनाया था नदिया को सागर को
नेह के रस से भर लाई गागर को
हमने भी चाँद तारों की छाया में
कुछ सपने सजाये थे
नहीं जानते थे पलक की झपक में
विश्वास की नीवें हिल जाती हैं
स्नेह प्रेम के बदले में
ठोकरें मिल जाती हैं
अपनों के जज़्बात अहसासात
हालात बदल जाते हैं
बरसों के रिश्ते अनदेखी आग में
पल में जल जाते हैं
लोग दुनिया से धोखा खाते हैं
हमने तो खुद से ही धोखे खाये थे
विश्वास की बुनियाद पर
कुछ रिश्ते बनाये थे

(80)

क्या इतना आसान है

जीवन की इस सांध्य वेला में
अतीत की बहुत-सी परछाइयाँ
कुछ भूली बिसरी कहानियाँ
आ-आकर तैरने लगती हैं
कभी आँखों के सामने
कभी दिल और दिमाग़ में
धुंध में छिपी यादें
न भूलती हैं न पूरी याद आती हैं
मैं बैठकर उन्हें क़तरा-क़तरा
जोड़ने की कोशिश करती हूँ
लेकिन उन्हें जोड़ने वाली
डोर के सिरे पकड़ में नहीं आते
और मैं घबराकर
एक बार फिर ख़ुद से कहती हूँ
जो बीत गया वह अतीत था
जिसे भूल जाना ही श्रेयस्कर है
पर क्या भूल जाना इतना आसान है!

(81)

बादल के आँसू

आई घटायें काली-काली
लाई छटायें क्या मतवाली
आसमान में घूम रहे हैं
काले-काले बादल ऐसे
झूम रहे हों बड़े-बड़े
काले मतवाले हाथी जैसे
गरज-गरजकर शोर मचाते
आये मस्त हाथी मदमाते
काले पर्वत बढ़े आ रहे
घूम-घूमकर आसमान में
हमला करने चढ़े आ रहे
बिजली की धारें जो चमकीं
जैसे दुशमन की नंगी तलवारें
लप-लप करती दप-दप दमकीं
फिर दो काले-काले पर्वत
बड़े ज़ोर से टकराये
एक दूसरे का सिर फोड़ा
ढेरों आँसू बरसाये
बादल के वो सारे आँसू
वर्षा बनकर धरती पर बरसे
धरती तक आते-आते
बन गये वो अमृत
जिसको छूकर तन-मन सरसे

(82)

एक साँस का फासला

सिर्फ़ एक साँस का फासला है
मौत और ज़िन्दगी में
पलक की झपक में
पूरा संसार बदल जाता है
क्षणभर में एक वर्तमान
अतीत बन जाता है
पलभर में व्याकरण का
काल बदल जाता है
धरती पर आकर साँस लेती है
एक नई ज़िन्दगी
धरती की डोर तोड़कर
साँसों का मोह छोड़कर
दूर कहीं अहश्य में
विलीन हो जाती है एक ज़िंदगी
न इसमें कोई बात नहीं है नई
बात सिर्फ़ इतनी ही है
किसी की आँख खुल गई
किसी को नींद आ गई
कवि की दो पंक्तियाँ
जीवन और मृत्यु का
पूरा दर्शन दरशा गईं

(83)

सौगात क्या तुम दे गए

तोड़कर विश्वास क्यों आघात देकर तुम गए
समर्पण मैंने किया सौगात क्या तुम दे गए
मानती हूँ प्यार के दो रूप हैं मिलना-बिछड़ना
जानती हूँ स्नेह में होता मनाना और बिगड़ना
आस्था विश्वास ही आधार हैं सम्बन्ध के
आस और विश्वास ही हैं सूत्र इस अनुबन्ध के
टूट जाता है कभी जब सूत्र इस विश्वास का
छूट जाता है तभी दामन किसी की आस का
ढूँढने तुम क्या गए सम्मुख जो था पढ़ न सके
तुम हमारे स्नेह की मूरत कभी गढ़ न सके
चैन मेरा छीन झंझावात देकर तुम गए
तोड़कर विश्वास क्यों आघात दे कर तुम गए

(84)

मैं तो हूँ राही परदेसी

मन कहता जीवन का क्षण-क्षण
कसकर भर लूँ मैं बाहों में
जो चपल श्वास उपहार मिले
वो कभी न बदलें आहों में
स्वच्छन्द मरूत् सी उड़ जाऊँ
धरती से अम्बर छू आऊँ
मन करे जिधर मैं मुड़ जाऊँ
मन कहे जहाँ मैं रूक जाऊँ
बादल से सागर का बन्धन
क्षितिज में मिलते धरती गगन
बिखरे रंग वन उपवन कानन
सृष्टि में सब अपने में मगन
मैं तो हूँ राही परदेसी
आया कुछ दिवस बिताने को
कल भोर चला मैं जाऊँगा
शायद फिर कभी न आने को
साँसों में भर ले जाऊँगा
यादों के सब पल-पल क्षण-क्षण
इतनी सी दुआ मुझको दे दो
भटकूँ मैं कभी न राहों में
मन करता जीवन का क्षण-क्षण
कसकर भर लूँ मैं बाहों में

85

बरसो मोरे अँगना

बरसो-बरसो काले मेघा, बरसो मोरे अँगना
नाचे मोरी पायल, बाजे मोरा कंगना
बरसो-बरसो काले मेघा, बरसो मोरे अँगना
पड़ीं फुहारें छम-छम, मोरा भीगा रे तन मन
राह बरस भर देखी, तब है आया रे सावन
परदेसी अब घर आयेंगे मोरे सजना
बरसो-बरसो काले मेघा, बरसो मोरे अँगना
भैया भी आयेंगे मोरे राखी आई रे
बहना भैया के रिश्ते की साखी आई रे
कभी अलग न करें राम जी भैया बहना
बरसो-बरसो काले मेघा, बरसो मोरे अँगना
मैं डाल के झूला पेड़ों पर, सखियों संग झूलूँ रे
सावन के गाने गा कर, सारे दुख भूलूँ रे
नन्हीं-नन्हीं बुँदियों का, पहनूँ रे गहना
बरसो-बरसो काले मेघा, बरसो मोरे अँगना

(86)

ऊषा रानी मुस्कुराती आई

छैल छबीली रंग, रंगीली
ऊषा रानी मुस्कुराती आईं
घूँघट को सरकाया मुखड़ा भी दिखलाया
सूरज को देखा तो मुख लाल-लाल शरमाया
देख मुखड़े की झलक झपके नहीं पलक
ऊषा रानी सब जग को भरमाती आईं
वन-वन में उपवन में घर-घर के आँगन में
फूल भी महक उठे पक्षीगण चहक उठे
कली-कली मुसकाई गली जीवन धुन छाई
अम्बर में नृत्य करती ऊषा रानी गुनगुनाती आईं
जागे छोटे बड़े काम को निकल पड़े
बालगण पढ़ने चले नवजीवन गढ़ने चले
क्या किसान, क्या जवान, सब में भर दिये प्राण
एक नई सुबह लिये ऊषा रानी लहराती आई
छैल छबीली, रंग-रंगीली
ऊषा रानी जीवन जगाती आईं
ऊषा रानी मुस्कुराती आईं

87

आँखों में दर्द लिये

आशिकी हद से गुज़र जाने की बात करते हैं
आँखों में दर्द लिये घुटते आहें भरते हैं
बात पे बात बनाते हैं कसम खाते हैं
एक-एक पल में कभी आते कभी जाते हैं
झूठ कहते हैं सनम हम तो तुम पे मरते हैं
किसी ज़ालिम पे कोई कितना एतबार करे
वो तो बेवफाई भी बार-बार करे
फिर भी उसकी नज़र से हम क्यों डरते हैं
उसके आने से दिल में अजब सा होता है
उसके जाने से धक से ग़ज़ब सा होता है
हाय क्या सब इसी को प्यार कहते हैं
प्यार में मर के जीते जाते हैं
ज़हर भी हँस के पीते जाते हैं
इश्क की इन्तहा यही ऐ दोस्त,
जो सताता है उसपे मरते हैं
आँखों में दर्द लिये घुटते आहें भरते हैं

(88)

मीरा सी दीवानी

कोई प्रेम का दीवाना
कोई प्रेम की दीवानी
हर रोज़ बन रही है
नित नई इक कहानी
मिल जाती कोई गंगा
सागर से अपने जाकर
अस्तित्व अपना ढूँढे
ख़ुद में उसे मिलाकर
कोई मस्त गीत गाता
अपने पिया की धुन में
बस एक ही पिया है
अपने जिया में गुन ले
गा-गा के वो रिझाये
रूठा पिया मनाये
वो प्रेम का दीवाना
कण-कण में उसको पाये
यूँ रोज़ बन रही है
इक नित नई कहानी
युग-युग में कोई आती
इक मीरा-सी दीवानी

(89)

अपनों के सपने

बह जाते हैं वो अपने
आँसुओं की बाढ़ में
जिन्हें छिपाते रहते हैं हम
चुप रहने की आड़ में
बरसों जिनकी यादों को लगाये रहे सीने से
बरसों तक जिनकी तस्वीर छिपाये रहे सीने में
हर पल-पल जिनके बिना क्षीण हुई शक्ति
जीवन भी जिनकी हम करते रहे भक्ति
क्यों न उनकी यादों को हम
बना लें अपनी शक्ति
क्यों अनुभव करें हम
जीवन से विरक्ति
क्यों बहा दें आँसुओं में हम
उन अपने अपनों को
क्यों न हम बटोरकर
जीवन के अमृत को
पूरा करें तन-मन से
अपनों के सपनों को
क्यों बहायें आँसुओं में
अपनों के सपनों को

(90)

सपनों के सुख

सपनों में कुछ सुख बरसे थे
सपनों में कुछ पल सरसे थे
जब आँख खुली सब रूठ गये
सुख के पल पीछे छूट गये
भीगी आँखों के सपनों को
आँखों के धोखे लूट गये
मन को मन ने कुछ समझाया
सपनों के सच को झुठलाया
मन ने समझी मन की भाषा
तज डाली सपनों की आशा
सपने कब अपने होते हैं
अपने तो सपने होते हैं
कवि झूठ नहीं लिखता कोई
हमने सपनों के जंगल में
क्यों सुख के कुछ क्षण परसे थे
क्यों उस क्षण की अभिलाषा में
हम पल-पल छिन-छिन तरसे थे

(९१)

बीते पल

याद न करो तब भी याद आते हैं
याद आकर हमें सताते हैं
बीते दिनों के बीते लम्हे ये
क्यों हमें बार-बार फिर बुलाते हैं
और भी काम बहुत हैं करने को
क्यों हमें राह से डिगाते हैं
दुनिया के ताने तंज़ गिले शिक़वे
हर पल दिल से हम भुलाते हैं
पर ये बीते दिनों के बीते पल
भूलने पर भी याद आते हैं
सोयं तो झाँकते हैं सपनों में
जागें तो दिल में गुल खिलाते हैं
जीतना चाहें अपनी सोच को हम
बीते पल क्यों हमें हराते हैं
आज वादा ये ख़ुद से कर डाला
हम अँधेरों को अब भगा देंगे
नारा नई रौशनी के सूरज का
आज दुनिया को हम सुनायेंगे
बीती यादों को छोड़कर पीछे
नई राह पर क़दम बढ़ायेंगे

(92)

कुछ मिर्चें कुछ बम

अपनों के ग़म ही क्या कम हैं
जो पराये भी ग़म दे जाते हैं
जो आते हैं हँसाने के लिये
वो ही आँखें नम दे जाते हैं
सबके ग़म को समझकर अपना
हमने पराये को समझा अपना
फिर भी क्यों सब आकर हमको
व्यंग तंज़ देकर जाते हैं
कभी-कभी अपने भी आकर
बरसा जाते फूल हैं हम पर
पर न जाने फूल वो कैसे
बन जाते हैं शूल ही हम पर
ज़हर भरी कुछ बात बनाकर
हमको बेदम कर जाते हैं
क्या होती है उनकी तमन्ना
क्या-क्या उनके मन में आये
शायद यह किस्मत है हमारी
ग़म दे जाते अपने पराये
मख़मल में लपेट कर हमको
कुछ मिर्चें कुछ बम दे जाते हैं
हाल हमारा अज़ब हो गया
अपने पराये सबसे घबराते हैं

(93)

कुछ सुन्दर सपने

कुछ सुन्दर सपने देख हृदय मचला था
कुछ मीठी बातें सोच हृदह बहला था
कुछ परिचित और अपरिचित चेहरे आये
आकर अपनों में झाँक-झाँक मुस्काये
आये कुछ स्वाद याद खट्टी मीठी यादों के
कुछ लटके टूटे तार झूठे वादों के
कुछ मधुर-मधुर स्वर गूँज उठे कानों में
मीठी-सी सरगम बदल गई तानों में
कुछ व्यंग बाण अब तक भी
हैं चुभे हुए अन्तर में
रिसता रहता है रोज़ ख़ून
उस चुभे हुए नश्तर से
कैसा है यह विधि का विधान
सुख-दुख हैं आते जाते
कभी तो आकर हमें हँसाते
कभी रूलाकर जाते
सुख-दुख के खेल तमाशे से
मन बहुत बार दहला था
आज अचानक
कुछ मीठी बातें सोच हृदय बहला था
कुछ सुन्दर सपने देख हृदय मचला था

94

तू भूल जा दिल

तू भूल जा दिल नग़मे गाने
तू सीख ले अब सदमे खाने
जीवन में सफ़र और ताल नहीं
रून-झुन छुन-छुन का जाल नहीं
अब साज़ लगे बेसफ़र बजने
तू भूल जा दिल नग़मे गाने
जीना कविता न कहानी है
न उपन्यास के नायक हम
टूटे साज़ों के तारों पर
गाने वाले अब गायक हम
रग-रग में बहता रंजोग़म
नग़मों में व्यंग और गाने,
तू भूल जा दिल नग़मे गाने
जीवन तो एक खिलौना है
जिसको बस हँसना रोना है
हर समय सोचता रहता है
कुछ कहता है कुछ सहता है
जीने के गुर दिल ही जाने
तू भूल जा दिल नग़मे गाने

(95)

दर्द की गर्द

उनकी मेरहबानियों से
काँटों पर करवटें बदलते रहे हम
रात-रातभर
दिन में खीजा किये हम
बात-बात पर
पर कोई भी सिला न मिला
हमारी परेशानियों का
न जाने कितना पसीना बहा डाला
हमने पेशानियों का
किससे कहें, क्या करें, कहाँ जायें
किसके काँधे पर सर रखकर रोयें
फिर सोचाकैसे कर्ज़ चुकायेंगे
उनकी मेहरबानियों का
इसलिये दबाकर रख लिये
सारे काँटे दिल के अन्दर
ठान लिया अब बनाना पड़ेगा
दिल को समन्दर
जिसकी गहराइयों में
छुप जायें मेरे सारे दर्द
फिर कभी न छाये मेरे दिन-रात पर
काँटों की चुभन
दर्द की ग़र्द

(96)

उसकी आवाज़

जब-जब बजते हैं उसकी आवाज़ के घुँघरू
लगता है जैसे ज़िन्दगी आ गई मेरे रूबरू
दिल के अन्दर तक चली जाती है उसकी आवाज़ की गहराई
लगता है समन्दर ने मुझे आवाज़ लगाई
कभी लगता है आसमान से किसी ने है पुकारा
जैसे आवाज़ लगाता हो मुझे कोई सितारा
कभी चारों दिशाओं से इक गूँज-सी है उठती
उसकी आवाज़ के जादू पे ज़िन्दगी मेरी लुटती
है कौन-सी ताक़त मुझे आवाज़ लगाती
हर पल हर क्षण जो मेरा साथ निभाती
कैसे बयान करूँ उसकी आवाज़ का जादू
दिल तो चाहे उस आवाज़ पे दुनिया ही लुटा दूँ
हर पल हर क्षण उसी आवाज़ पे झूमूँ
लगता है ज़िन्दगी आ गई मेरे रूबरू
दिल के हर तार पे सरगम सी लगे बजती
जब-जब बजते हैं उसकी आवाज़ के घुँघरू

(97)

प्रकृति का कहना

विदा हो गये चंदा तारे, जो आये थे बीती रात
अब तो निकला उजला सूरज ले कर नया नवेला प्रात
दूर छुपा जाकर अँधियारा
आकर छाया नव उजियारा
बिखरीं किरणें चमका कण-कण
ओस बिन्दु चमके मोती बन
तभी अचानक उड़कर आया
एक आवारा बादल
समझा सूरज को ढक लेगा
था वो कितना पागल
सूरज ने जब खोली आँख
भाग गया वो उल्टे पाँव
उजली धूप बिखर गई फिर से
जहाँ हो गई थी छाँव
बादल से सूरज ने कहा-
सूनो-सुनो ओ बादल जी
अभी नहीं है कोई ज़रूरत
और किसी दिन आना जी
आज है मेरी बारी मुझको
ख़ूब चमकना यहाँ-वहाँ
ख़ूब बरसना यहाँ-वहाँ
समय पे ही हर काम को करना
यही प्रकृति का कहना
प्रकृति से उल्टे काम करें तो
दुख पड़ता है सहना

(98)

अपनी ही नज़रों में

ज़िन्दगी में मिले रंग-रंग के लोगों ने
सिखानी चाहीं तरह-तरह की बातें
कभी शायद हम में ही थी
हम सीख न सके वो घातें
किसी ने सिखाया अलग-अगल समय पर
अलग-अलग मुखौटे चढ़ाना
किसी ने सिखाया एक दूसरे को लड़ाना
कहीं सिखाई गई व्यंग और तानों की भाषा
कहीं बताया गया कैसे भंग की जाये किसी की आशा
किसी ने समझाये तंग करने के तरीके
किसी ने समझाये जंग करने के तरीके
किसी ने मन्त्र दिया जयचन्द और विभीषण बनने का
किसी ने गुर सिखाया कुछ काम न करने का
क्योंकि अजगर करे न चाकरी
कितनी बेकार हैं आदर्शों और उसूलों की बातें
लोग हमें समय-समय पर समझाते रहे
सीखा सुना तो बहुत कुछ पर समझ न पाये
लोगों के रंग में ख़ुद को रंग न पाये
यहीं खा गये हम मात
ग्रहण न कर पाये सीख की सौगात
रंग न पाये खुद को दुनिया के रंग में
जीत नहीं पाये कभी ज़िन्दगी की जंग में
उठ न पाये चाहे दुनिया की नज़रों में
पर गिरे नहीं कभी अपनी ही नज़रों में

(79)

इन्द्र धनुष का हार

काले-काले जलभरे बादल, सुन लो मेरी पुकार
मेरे आँगन के पेड़ों पर, जल बरसाओ धार-धार
इन पेड़ों पर बैठें खगजन
मन हर लेता उनका गुँजन
पपिहा पी-पी तान सुनाये
कूक कोयलिया मन बहलाये
तोता मैना सब पक्षीगण
झूलें उनकी डार-डार
आ कर बरसो मेरे आँगन
इन पेड़ों की प्यास बुझाओ
जब तुम बरसो तब मन सरसे
इन के मन को भी सरसाओ
बाद में जब सूरज निकलेगा
बूँदें चमकें ज्यों हीरे हज़ार
राह तुम्हारी ताक रहे हम
हाथ जोड़ कर विनती करते
खेत-पात वन उपवन कानन
सब ही राह तुम्हारी तकते
अब तो छम-छम बरसो आ कर
तुम्हें पुकारें बार-बार
गरज तरज बिजली को लाना
ढम-ढम ढोल ढमाके लाना
अब बिल्कुल न देर लगाना
हम मल्हार का गाते गाना
इन्द्र धनुष फिर आयेगा
पहनाने तुमको हार-हार
सुन लो अब मेरी पुकार

(100)

अपने ढंग के अन्धे

दुनिया के कैसे धन्धे हैं
सब अपने ढंग के अन्धे हैं
कोई मोह पाश में फँसे हुये
करते रहते मेरे अपने
जब अपने दे देते धोखा
तब टूट जायें सारे सपने
कोई धन की भँवर में फँसा हुआ
लालच में है डूबा रहता
खाता रहता तब तक गोते
जब तक न सारा धन बहता
कोई ग्रस्त ईर्ष्या द्वेष में है
दूजे का सुख न लख पाये
दूजों के सुख से जल-जल कर
स्वसुख का स्वाद न चख पाये
विश्वास घात कोई करता
अपनों पर घात लगाता है
जाने ना अपनों का दिया दर्द
कितने आघात लगाता है
इन सबकी जब आँखें खुलती
तब तक है वक़्त निकल जाता
दुख अपनों को पहुँचने से
सब टूट जाये रिश्ता नाता
ये नहीं जानते भाग्यहीन
कैसे सौभग्य के मन्दे हैं
सब अपने ढंग के अन्धे हैं
दुनिया के कैसे धन्धे हैं

101

हैं अभी फर्ज़ बाकी

बहुत कुछ है करना बहुत कुछ है बाक़ी
मिली एक मंज़िल तो दूजी है बाक़ी
है जब तक ये जीवन सफ़र रहता बाक़ी
है गुज़रा जो उसका असर रहता बाक़ी
नहीं ख़त्म होती हैं जीवन की राहें
हैं राहों में अब भी कई मोड़ बाक़ी
ये दो राहे चौराहे न ख़त्म होते
हैं सड़कों के कितने अभी जोड़ बाक़ी
ये जीवन की उलझन है बालों के गुच्छे
है सुलझाना जिनको अभी तो है बाक़ी
हैं दुःख-दर्द, ग़म, रंज अपनों के कितने
है बहलाना उनको अभी तो है बाक़ी
ख़ुदा ने हमें काम करने को भेजा
अभी तो ख़ुदा का वही कर्ज़ बाक़ी
ये परिवार दुनिया सभी तो हैं अपने
सभी के लिये हैं अभी फर्ज़ बाक़ी
ये जीवन तो संघर्ष है सब हैं कहते
अभी तो बहुत से हैं संघर्ष बाक़ी
ख़ुदा मेरे ताकत मुझे इतनी देना
भला काम कोई न रह जाये बाक़ी

(102)

सम्बन्धों की सरगम

सम्बन्धों की सरगम
आयु पर्यन्त बजती रहती है
इनकी सितार टूटते तारों के साथ भी
बजते रहने की कोशिश करती रहती है
कभी रिश्तों की स्निग्धता
कभी रिश्तों की संदिग्धता
दग्ध करती है हृदय को
व्यथित करती है शरीर को
जीवित रखने के प्रयत्न
निरन्तर जारी रहते हैं
कभी दूरियाँ न बढ़ें
सदा डोरियाँ जुड़ी रहें
सम्बन्धों में गाँठ न पड़ने पाये
व्यर्थ के तूफान न उमड़ने पायें
परिवार न उजड़ने पायें
स्निग्ध सम्बन्ध सुखी व सुमधुर बने रहें
संदिग्ध सम्बन्ध सदैव न तने रहें
दिन का चैन रातों की नींद बनी रहे
रिश्तों की रातें मीठे सपनों से सजती रहें
सम्बंधों की सरगम स्वर-लय-तान के साथ
बजती रहे, बजती रहे

आत्मा से आत्मा का रिश्ता

प्यार के रिश्तों में सिर्फ़ प्यार को ही नहीं
दूसरे के दुःख-दर्द को भी समझना होता है
हर रिश्ते की अपनी एक अलग खुशबू होती है
उसी के अनुसार रिश्तों को महकना होता है
हर रिश्ते की अपनी कुछ शर्तें होती हैं
जिन्हें ईमानदारी से निभाना होता है
हर रिश्ते के प्यार का कुछ अलग रंग होता है
हर रिश्ते के बीच वह रंग दिखाना होता है
कहीं ख़ून के रिश्ते, कहीं समाज के रिश्ते
कहीं दोस्ती के रिश्ते, कहीं गुरू शिष्य के रिश्ते
कहीं हमदर्दी के रिश्ते और कहीं दर्द के रिश्ते
वो रिश्ते जिनमें नाख़ूनों से माँस अलग नहीं होता
वो रिश्ते जहाँ सिर्फ़ आत्मा से आत्मा का रिश्ता होता है
दर्द के रिश्ते बड़े गहरे होते हैं
जिन्हें साँसों की गहराईयों में बसाना होता है
सगे रिश्तों के दिये ज़ख़्म भी बड़े गहरे होते हैं
जिन्हें सदा दिल में छुपाना होता है
शायद आत्मा से आत्मा का रिश्ता
सबसे बड़ा रिश्ता होता है
जिसमें ईमानदारी, प्रेम,
हमदर्दी और दर्द दूर करने का
अमृत छुपा रहता है

(104)

काग़ज़ के दिल में भर दिया

निकला मेरे दिल से ग़म
कागज़ के दिल में भर दिया
ये तो शिकायत नहीं करेगा
उफ़ तुमने ये क्या कर दिया
जब कोई अपना न मिला
ग़म सुनाने के लिये
जब कोई काँधा न था
आँसू बहाने के लिये
अपना कहने वाला तो
पहचानने से भी मुकर गया,
दिल का सारा दर्द तब
काग़ज़ के दिल में भर दिया
दोस्तों ने जब किनारा कर लिया हमसे
तब किताबों से थी कर ली दोस्ती
ज़िन्दगी का फलसफा था सामने
नहीं कोई इससे बढ़कर दोस्ती
दूर मेरे दर्द को इन दोस्तों ने कर दिया
दिल का सारा दर्द मेरी पुस्तकों ने हर लिया
जो भी आया दिल में वो सब लिख दिया
और कागज़ ने भी अपने दिल के अन्दर रख लिया
इस तरह निकला जो ग़म दिल से मेरे
कागज़ के दिल में भर दिया

105

सागर से मिल जातीं

झम झमा झम
ढम ढम ढम ढम
रिम झिम रिम झिम
छम छम छम छम
टिप टिप टिप टिप
टप टप टप टप
कितने नाम तुम्हारे वर्षा रानी
कभी मूसलाधार बरसकर
भर-भर जातीं पानी
कभी लगे ज्यों फटे हों बादल
धम से तुम आ जातीं
कभी लगे फूटे घट नभ में
कैसे तुम भरमातीं
सागर की गोदी से निकलकर
जगत भ्रमण कर आतीं
जंगल-जंगल, पर्वत-पर्वत
बरस-बरस तुम आतीं,
पर्वत पर बन बर्फ जमो तुम
चमको चाँदी की चादर-सी तुम
रूप बदल कर पिघल-पिघल कर
नदिया, झरने बन जातीं
अम्बर से पृथ्वी पर आकर
चल-चल, बह-बह जातीं
और अंत में अपने प्रियतम
सागर से मिल जातीं

जब करते तदबीर

कभी हार से डर मत जाना
जीत सिखाती है हर हार
डूबने वाला भी हिम्मत करता तो
हो जाता है पार
बंद हुए जब सभी द्वारा तब
एक द्वारा खुल जाता है
साथ छोड़ दें जब सब अपने
कोई एक मिल जाता है
डूबने वाले को तिनके का
मिल जाता है सहारा
वही डूबता जो डर जाता
जो ख़ुद से है हारा
जब-जब हम प्रयत्न करते हैं
जब करते तदबीर,
तभी काम होते हैं पूरे
फल देती तक़दीर

107

कुर्सी की लकड़ी

वो न जाने सचमुच नेता थे
या थे एक परिपक्व अभिनेता
उन्हें अपनी कुर्सी से बहुत प्यार था,
कुर्सी पर चिपके रहना
उनके जीवन का आधर था
उनके घर के बागीचे में भी
एक कुर्सी रखी रहती थी
एक पेड़ के नीचे रखी वह कुर्सी
नेता जी की पहचान थी
उस कुर्सी पर बैठकर नेता जी
आँख बंदकर के ऊँघते रहते थे
पता लगा कि इस कुर्सी की लकड़ी
नेता जी के उसी पेड़ की है
जिस पर बरसों तक एक उल्लू बैठता रहा था
नीचे बैठे नेता जी को देख्कर
वह भी हँस-हँस कर ऊँघता था
आज पेड़ अपने सौभाग्य पर इतरा रहा है
पहले उस पर बैठकर उल्लू ऊँघता था
आज उससे बनी कुर्सी पर बैठकर
इतने महान नेता ऊँघ रहे हैं
पहले काले कौए और उल्लू बैठते थे
आज सफेद झक कपड़ों में
सफेद बगुला बैठा है
कितनी तरक्की हुई है उसकी
जब वो बन गया एक कुर्सी
क्या गर्व से है अकड़ी
कुर्सी की लकड़ी

(108)

गाण्डीव की धार

मैं सिपाही कलम का
लेकर कलम की धार
आगे बढ़ रहा हूँ
जा रहा हूँ लड़ने व्यवस्था से
जहाँ सब कुछ है अव्यवस्थित
हैं भरे आक्रोश से जन-गण
हृदह हैं व्यथित, कुण्ठित
काश मेरी कलम की स्याही
करे काला उन उजले चेहरों को
जो मुखौटों में छुपाकर काले मुखों को
श्वेतधारी वक बने
अंगरक्षकों के बीच अकड़-अकड़कर चलते हैं
गर्व पद का, मोह कुर्सी का लिये
मदमत गज से झूमते हैं
मर रहे तिल-तिल करके जो जनगण
क्या मिलेगा न्याय उनको
भूख से जो मर रहे हैं
क्या मिलेगा पेट भरने का तनिक अधिकार उनको
सर्दी-गर्मी में सड़क पर मर रहे जो
क्या मिलेगा एक छत का आधार उनको
क्या निराशा में आशा की कोई किरण मिलेगी जन-गण को
चल रहा लेकर कलम की धार
काश मेरी कलम में आ जाये
अर्जुन के गाण्डीव की धार

(109)

हाँ मैं बेटी हूँ

मैं बेटी हूँ, मैं बेटी हूँ
हाँ मैं इस घर की बेटी हूँ
यहीं प्रथम मैं, माँ बोली थी
माँ की गोदी में लेटी हूँ
बचपन में यहाँ चलना सीखा
फूलों की तरह खिलना सीखा
यहीं पढ़ाया माँ ने क ख
इस आँगन में खेली गुड़ियाँ
माँ ने ढेरों प्यार लुटाया
बापू ने विश्वास जगाया
लेकिन ज़रा बड़ी होते ही
मैं तो होने लगी पराई
मेरी शादी की चिन्ता में
माँ ने अपनी नींद गँवाई
इतनी दौलत कहाँ से लायें
जो दहेज में दे पायें
एक-एक दिन उम्र बढ़ रही
हर दिन माँ की नींद उड़ रही
मैं तो सोच रही बस इतना
मैं किस्मत की हेठी हूँ
मैं बेटी हूँ, मैं बेटी हूँ
हाँ, मैं इस घर की बेटी हूँ

(110)

विदेह

बन विदेह रहना जीवन में झूठा, जीवन झूठी काया
जीवन को अपना न समझना, यह तो होता सदा पराया
जीवन की गुत्थी में न उलझना
कौन आज तक समझ है पाया
जीवन को अपना न समझना
यह तो होता सदा पराया
जीवन एक ही तो होता पर
स्वर्ग नर्क हम सब में रहते
जो-जो रंग दिखाता हमको
रोकर हँसकर सबको सहते
कभी ठहाके लगा रहे हैं
कभी आँख से आँसू बहते
कभी दबाकर सब कुछ मन में
नहीं किसी से कुछ भी कहते
कोई पराया, कोई अपना, जीवन कैसा झूठा सपना
जाने किस क्षण टूट जाये, झूठे सपनों की झूठी माया
जीवन तो उस दिन से न अपना
जिस दिन मानव जग में आया
जीवन के रंग ने हमको
सहलाया और कभी सताया
जीवन बालों का है गुच्छा
कभी है उलझा, कभी है सुलझा
ये मानव की किस्मत मेहनत, क्या उसने जीवन में कमाया
खेल नियति के कोई न जाने, कितना खोया कितना पाया
जीवन को अपना न समझना, यह तो होता सदा पराया
बन विदेह रहना जीवन में, झूठा जीवन झूठी काया

प्रकाशित कृतियाँ

अनुभव

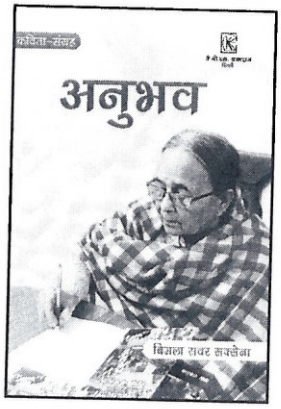
कविता-संग्रह
अनुभव
विमला राखर सक्सेना

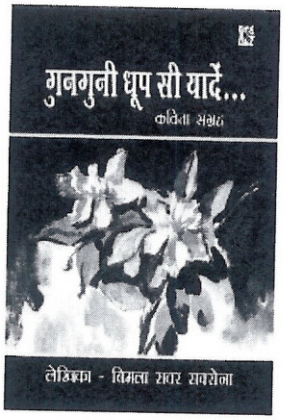
गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - विमला राखर सक्सेना

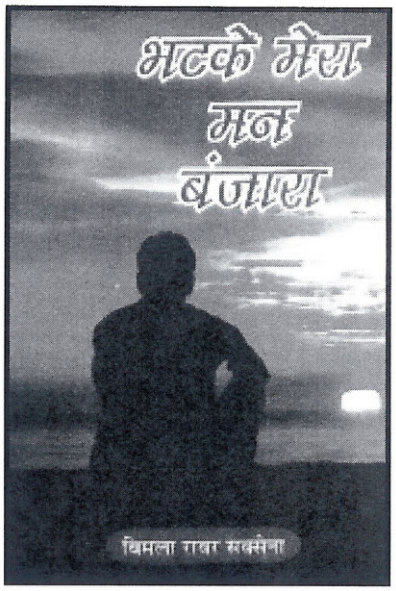
भटके मेरा मन बंजारा
विमला राखर सक्सेना

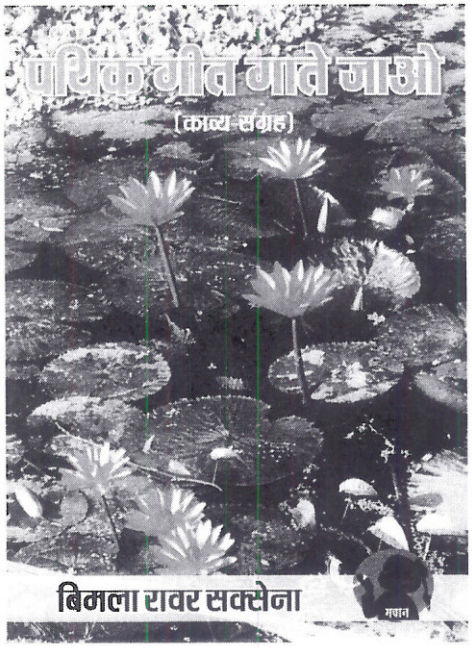
पथिक गीत गाते जाओ
[काव्य-संग्रह]
बिमला रावर सक्सेना

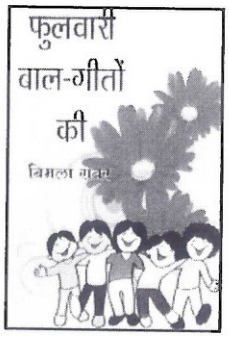
फुलवारी
बाल-गीतों
की
बिमला रावर

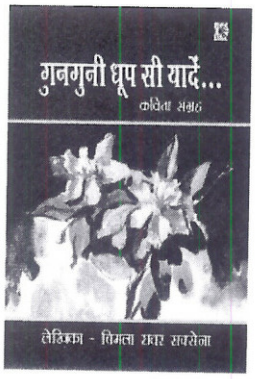
गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

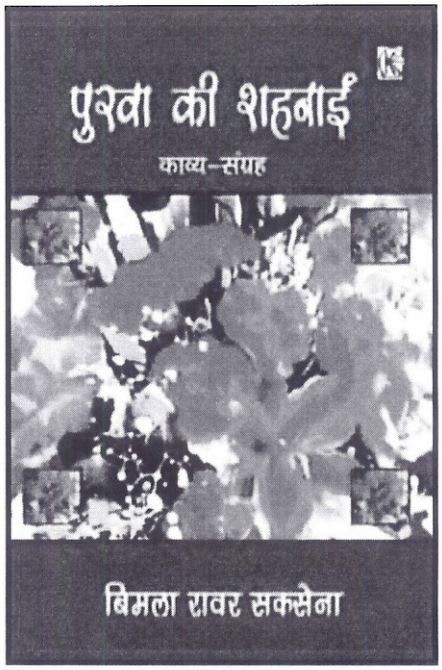
पुरवा की शहनाई
काव्य-संग्रह
बिमला रावर सक्सेना

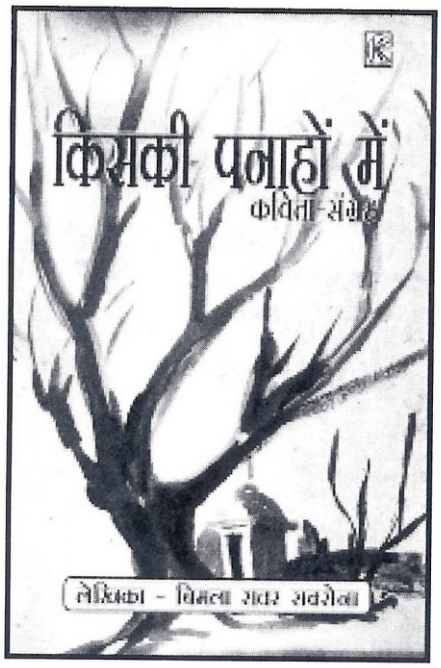
किसकी पनाहों में
कविता संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

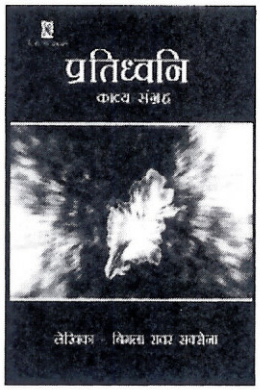
प्रतिध्वनि
काव्य संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

जिन्दगी और मुखौटे
बिमला रावत सक्सेना

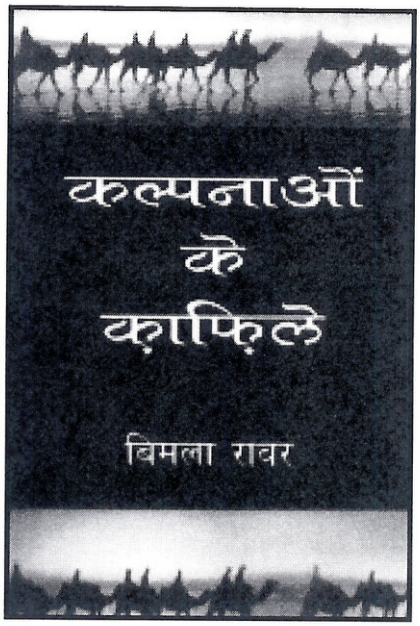
कल्पनाओं
के
क़ाफ़िले
बिमला रावर

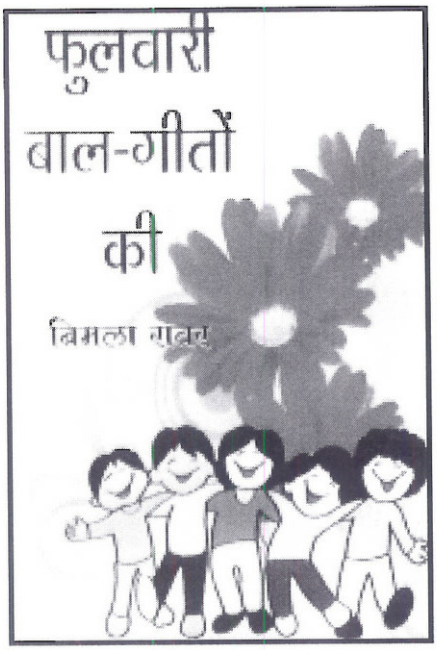
फुलवारी
बाल-गीतों
की
बिमला गुप्ता

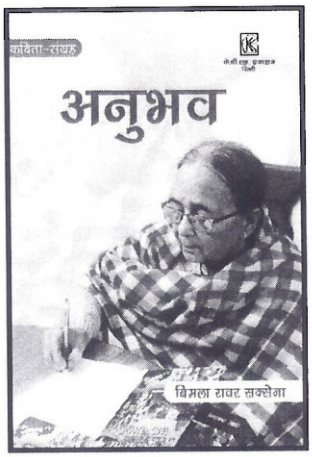
कविता-संग्रह
अनुभव
बिमला रावत सक्सेना

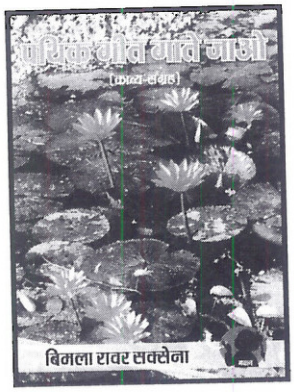
बिमला रावत सक्सेना

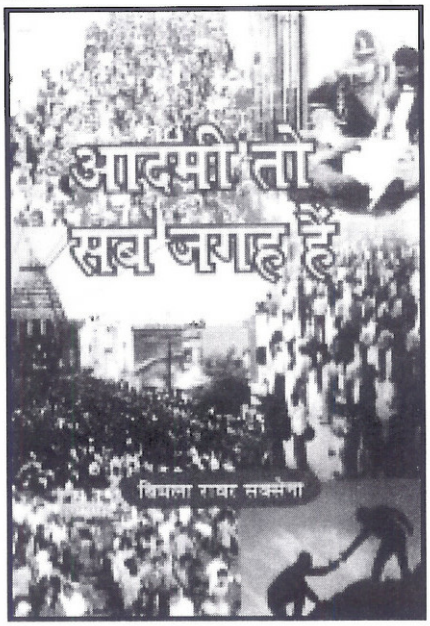
आदमी तो
सब जगह हैं
बिमला रावत सक्सेना